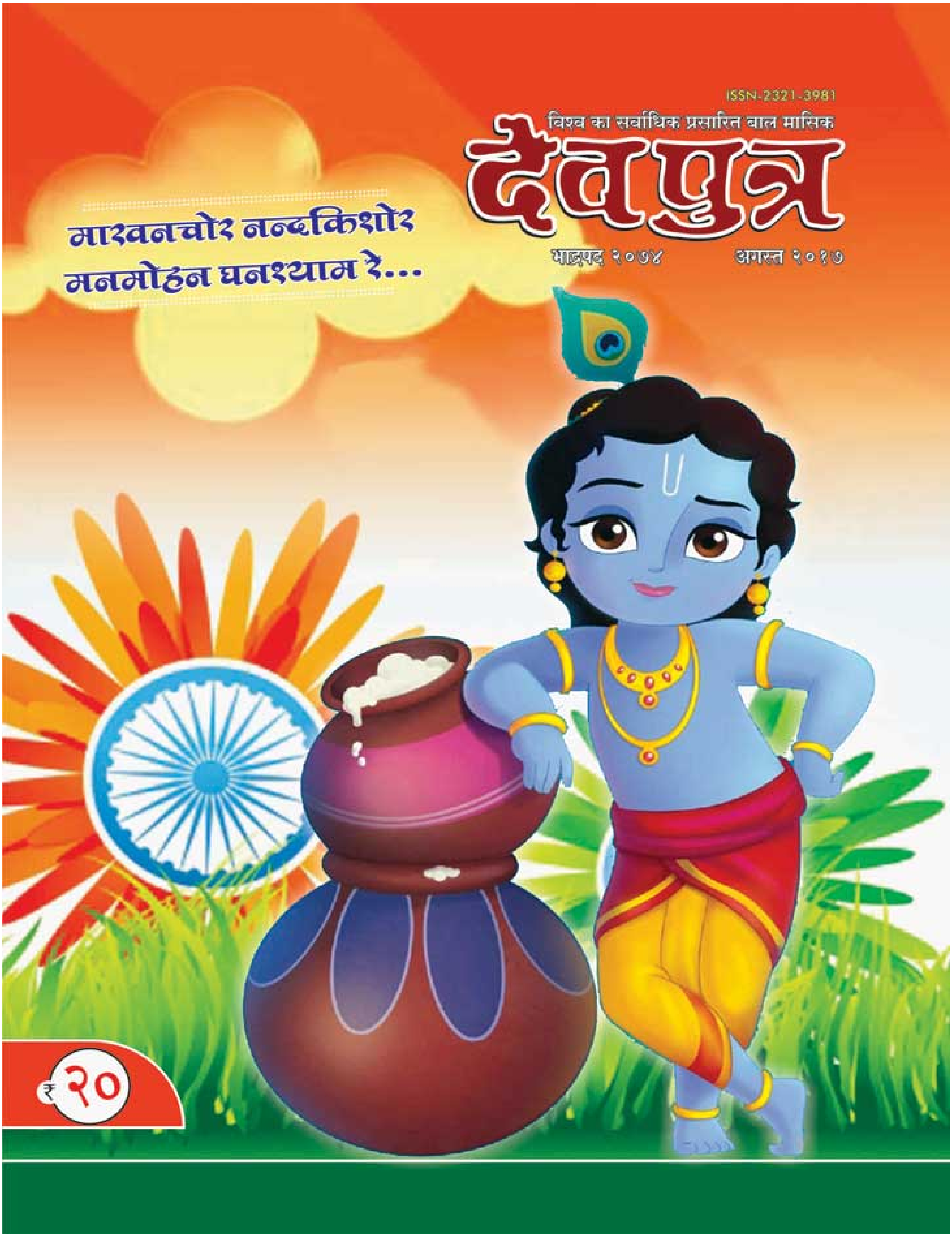
ISSN-2321-3981
विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
भाद्रपद २०७४
अगस्त २०१७
माखनचोर नन्दकिशोर
मनमोहन घनश्याम रे...
₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

किरण कौशल 3rd Rank | अजय मिश्रा 5th Rank | लोकेश कुमार सिंह 10th Rank | प्रदीप राजपुरोहित 13th Rank | निशांत जैन 13th Rank

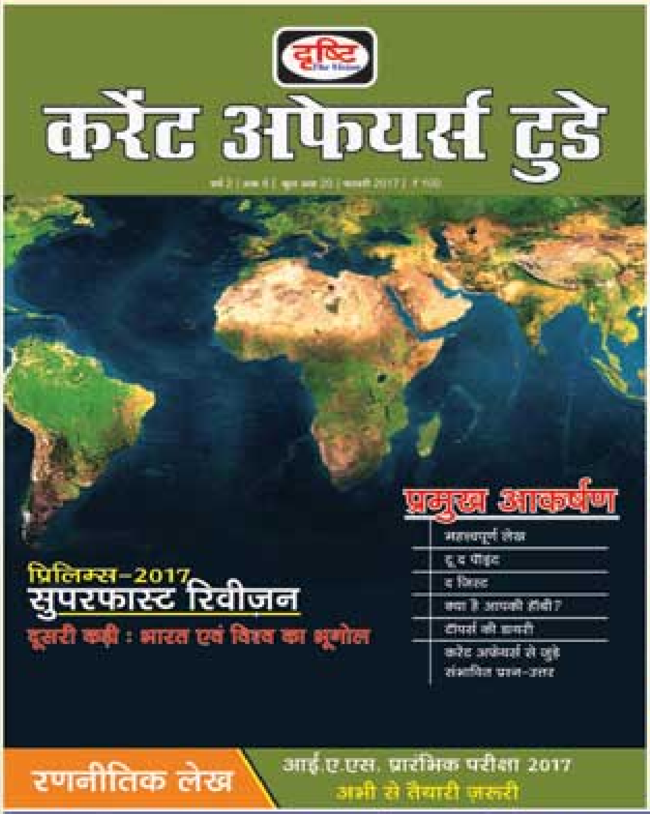

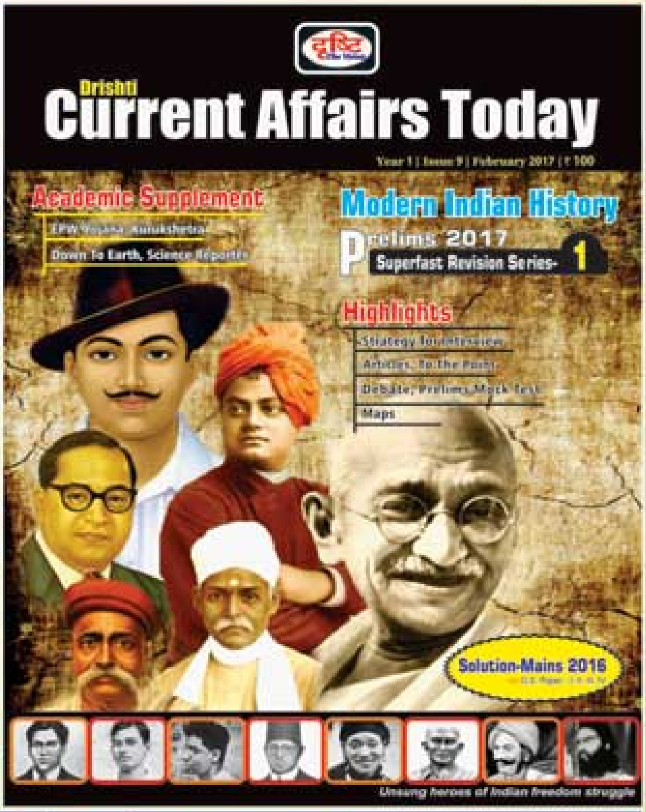

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

भाद्रपद	२०७४	▪	वर्ष ३८
अगस्त	२०१७	▪	अंक २

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक (कम से कम १० अंक लेने पर)	:	१३० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या – 53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनों!

अभी गुरु पूर्णिमा पर गुरु पूजन के अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। आप को भी कुछ कार्यक्रमों को देखने या उनमें सम्मिलित होने का अवसर आया होगा। मैं भी एक बड़े कार्यक्रम में उपस्थित था। अत्यंत शानदार और भव्य कार्यक्रम। उसके प्रमुख वक्ता थे एक प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्त्ता। अपने क्षेत्र के अत्यंत प्रतिष्ठित विद्वान और चिंतक भी।

श्री गुरु पूजन की परम्परा, उसका महत्व आदि पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने एक बड़ी महत्वपूर्ण बात कही। बड़े सहज ढंग से अपनी पीड़ा को शब्दों में व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आज भी गुरुओं की बड़ी मान्यता है, बड़ा महत्व है परन्तु दुःख यह देखकर होता है कि लोग 'गुरु को तो मानते है परन्तु गुरु की नहीं मानते'। वे बड़े सहज प्रवाह में अपनी बात कह गए किन्तु जब उन्होंने इसे स्पष्ट किया तब ध्यान में आया कि वह पीड़ा उनकी नहीं सम्पूर्ण समाज की हैं। देश की नहीं विश्व की है।

गुरुओं की आज विशाल मालिका है। आध्यात्मिक देश होने के कारण हमारे यहां संख्या भी अधिक है और परम्परा भी पुरानी है। हमारे श्रद्धाभाव को भी चुनौती नहीं दी जा सकती है और न उनके श्रीमुख से जो सार्वजनिक रूप से निसृत होता है उस पर किसी प्रश्नवाचक चिन्ह की आवश्यकता है, परन्तु फिर भी यह सत्य है कि 'गुरु को मानते है, गुरु की नहीं मानते'। किन्हीं विशिष्ट अवसरों और उदाहरणों को हम छोड़ दें, अपवादों को जाने दें तो गुरु श्रेष्ठ आचरण की बात करते हैं, 'पर पीड़ा सम नहीं अधभाई' का पाठ पढ़ाते हैं, मन, वचन और क्रिया में साम्य की शिक्षा देते है और 'विश्व का कल्याण हो' और 'प्राणियों में सद्‌भावना हो' यह उद्‌घोष करते हैं और कराते हैं किन्तु गुरुओं की यह सद-इच्छा उनके चरण कमलों से विरत होते ही न जाने कहां काफूर हो जाती है?

बच्चो! सच मानिए हमने अपने गुरुओं की बात को ठीक से समझा, योग्य प्रकार से उसकी विवेचना करके उसे जीवन में उतारा, आचरण में लिया, तो हम अपना जीवन धन्य बना सकते हैं।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- सच्चा बंधन - अरविन्द कुमार साहू ०५
- उमा ने दिखाया... - विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी १४
- बुद्धिबल ही सर्वश्रेष्ठ - डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी २०
- वह खुश हो उठा - डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव २९
- शांति का मंत्र - राजा चौरसिया ४२

लघुकथा

- ऐसे बना भारत - मनोहर चमोली 'मनु' १३
- जमीन आसमान - मीरा जैन ४५

संस्मरण

- आदर्श पत्नी... - शैवाल सत्यार्थी २५

प्रसंग

- परोपकार ही पूजा - मोहन उपाध्याय ४१

काव्य नाटिका

- पन्द्रह अगस्त - सुरेन्द्र अंचल १०

कविता

- उस देश को भारत - आदर्श ठाकुर ०८
- बृज दर्शन की रेल - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ १७
- सूरज - ममता असाटी १८
- विजयश्री - रामकिशोर शुक्ल 'विशारद' २७
- हिन्दोस्तां हमारा - उमाशंकर 'मनमौजी' ३९

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की... - २२
- आपकी पाती - २४
- हमारे राज्य पुष्प - डॉ. परशुराम शुक्ल ३५
- कामरूप के संत... - डॉ. देवेन्द्रचंद दास 'सुदामा' ३६
- पुस्तक परिचय - ४०

बाल प्रस्तुति

- दो दोस्त - शांतनु गुप्ता ०७
- सबको सुखी बनाना - शिवानी ठाकुर १२
- फूल - शांभवी गुप्ता ३०
- हम हाथी नहीं हैं... - जाह्नवी खत्री ३२

एवं अन्य ढेरों
मनोरंजक सामग्री

सच्चा बंधन

कहानी : अरविन्द कुमार साहू

सावन आते ही चारों और प्रकृतिक सुषमा छा गई थी। जहां–तहां नए पौधों के अंकुर फूटने लगे थे। नई कोपलों और रंग बिरंगे फूलों ने हरियाली की चादर पर मानो चित्रकारी कर दी थी। रक्षाबंधन का पर्व नजदीक होने के कारण उत्सव की तैयारियां जोरों पर थीं। महिलाओं के साथ ही बच्चों का उत्साह भी देखते ही बनता था।

माँ ने आँगन में जल से भरा मिट्टी का कलश रखकर उसे गोबर से सजाकर उसी में जौ के दाने बो दिए थे। उनमें निकले अंकुरों से थोड़ा–थोड़ा रोज बढ़ते हुए श्रेया बड़ी उत्सुकता से देखती रहती थी। माँ ने उसे बताया था कि इन पौधों को कजली कहते हैं। रक्षाबंधन के दिन तक ये कजली उसके एक अंगुल बराबर तक बड़ी हो जाएगी। इन्हें वह मामाजी के कानों के पास लगाकर पारम्परिक ढंग से रक्षाबधंन का पर्व मनाएगी।

''पर मैं तो राहुल भैया को सुंदर और बड़ी वाली राखी ही बांधूगी।''–

श्रेया ने माँ से कहा।

''हाँ–हाँ, मैं बड़ी सी छोटे भीम की कार्टून वाली राखी ही बंधवाऊंगा।'' – राहुल ने भी आँगन में आते हुए श्रेया के सुर में सुर मिलाया।

''जरूर बंधवाना बच्चो! जो तुम्हें अच्छा लगे। वैसे भी आजकल तो यही चलन में है। पर मैं तो पारम्परिक ढंग से ही सारे त्यौहार मनाती हूँ।'' माँ ने मुस्कुराते हुए कहा।

माँ, ऐसा क्यों? क्या तुम्हें नया चलन अच्छा नहीं लगता?'' राहुल ने आँखें सिकोड़ी।

नयापन भी अच्छा लगता है बेटा, क्योंकि समय के साथ कुछ बदलाव होने से परम्पराएं व त्यौहार अधिक दिन तक चलते हैं। पर हमें त्यौहार मनाने के वे कारण भी जरूर याद रखने चाहिए जो कि परम्पराओं के साथ स्वयं जुड़े होते हैं।''

''अच्छा...?'' श्रेया ने आश्चर्य से कहा। ''रक्षाबंधन मनाने के पीछे ऐसा क्या कारण है?''

''बच्चो! प्रत्येक भारतीय पर्व त्यौहार और पूजा पाठ की सभी परम्पराएं किसी न किसी रूप में प्रकृति और पर्यावरण से ही जुड़ी हुई हैं। रक्षाबंधन का पर्व भी उनमें से एक है। यह समय वर्षा ऋतु का है। जब प्राकृतिक वातावरण एकदम धुला, साफ, हरा भरा और प्रदूषण मुक्त होता है। ऑक्सीजन की मात्रा वायुमंडल में बढ़ जाती है। नए पेड़–पौधे उगने लगते हैं और जीव–जंतुओं के लिए भी अनुकूल वातावरण बन जाता है। इसका सर्वाधिक लाभ हमें ही मिलता है।'' बच्चों को यह जवाब रोचक लगा तो वे ध्यान से सुनने बैठ गए।

माँ ने आगे बताया कि अच्छी वर्षा, अच्छे वातावरण से अच्छी फसलें होती हैं। पेड़–पौधों से फल–फूल, औषधियाँ, कीमती लकड़ियाँ प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है। ये सारी वस्तुएँ हमारे दैनिक जीवन की जरूरतें तो पूरी करती ही हैं, साथ में हमें अच्छा स्वास्थ्य और लम्बी आयु भी प्रदान करती है। इसलिए पर्वो त्यौहारों में हम प्रकृति के प्रतीकों और प्राकृतिक उत्पादकों को सम्मिलित करके उनके प्रति कृतज्ञता भी ज्ञापित करते हैं। इससे प्रकृति की सुरक्षा और सुरक्षा की हमारी जरूरत और आदतें अपने आप परिष्कृत होती रहती हैं।''

''हाँ माँ! सचमुच हमें अपने अपने ढंग से प्रकृति का आदर करना चाहिए।''–बच्चों ने सहमति जताई।

''अच्छा माँ ! सच बताओ, रक्षाबंधन के पर्व पर हम अपने भाइयों को ही राखी क्यों बांधते हैं?'' श्रेया ने बड़ा मासूम सा सवाल किया तो राहुल भी चौकन्ना हो गया।

माँ गंभीर हो उठी। बोली– ''बेटी! सिर्फ भाइयों को ही नहीं हम अपने किसी भी प्रिय व्यक्ति को राखी का धागा बांध सकते है। भाई, पिता, गुरु, सैनिक, शासक या किसी अन्य को। जिसके भी प्रति हम सम्मान की भावना रखते हैं, उसकी भी समृद्धि और लम्बी आयु की कामना अवश्य करते हैं। ये राखी का धागा तो एक दूसरे को प्रेम संबंधों में बांधे रखने का प्रतीक भर है। असली उद्देश्य तो भावनात्मक लगाव और एक दूसरे की सुरक्षा–संरक्षा मजबूत बनाए रखने का होता है।''

लेकिन राहुल की इस बात से श्रेया चिढ़ी नहीं बल्कि गंभीर हो उठी। ''हाँ, मैंने भी पिछली बार पुरोहित जी को मोहल्ले में दादाजी, पिताजी और सभी लोगों की कलाई पर रक्षा सूत्र बाधंते देखा था।''

श्रेया के दिमाग में कुछ नया विचार कौंध रहा था। कहने लगी– ''ठीक है माँ! ये तो समझ में आ गया कि हम किसी भी रिश्ते को प्रतीक बनाकर राखी बांध सकते हैं। तब क्या यह पेड़–पौधों पर भी लागू होता है? आखिर वे भी तो हमें अनेक जीवनदायी वस्तुएँ देकर हमारे जीवन के बेहद नजदीक हो जाते हैं।''

''बिल्कुल बेटी! हमारे और प्रकृति के रिश्ते पर भी शत–प्रतिशत लागू होता है। कुछ दिन पहले तुम वट सावित्री पर्व की पूजा पर मेरे साथ गई थी न?''

''हाँ माँ! वहाँ तमाम महिलाएँ बरगद के पेड़ के नीचे पूजा करके उसके चारों ओर कच्चा धागा लपेट रही थीं। वहाँ तो ढेर सारा मोटा हो गया धागा अभी भी बंधा है। यह कैसा पर्व है?''

''बेटी! यह भी एक प्रकार से प्रकृति का रक्षाबंधन है। दरअसल बरगद का वृक्ष हजारों वर्षों तक जीवित और हरा भरा रह सकता है। इसलिए इसे दीर्घायु का प्रतीक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि पौराणिक काल में ऐसे ही एक वटवृक्ष (बरगद) की छत्रछाया में सावित्री ने यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण बचा कर लम्बी आयु प्राप्ति की थी। इसी कारण आज भी महिलाएँ बरगद की पूजा करके कृतज्ञता ज्ञापित करती है और उसे रक्षा सूत्र बाँधकर एक दूसरे की दीर्घायु की कामना करती है।''

माँ ने लम्बी सांस छोड़ते हुए कहा– ''....और बेटी यह तो तुम जानती ही हो कि ऐसे वृक्षों को पूज्य बना देने से हमारे समाज में उनकी कटान नहीं हो पाती।''

''अरे वाह माँ! तुमने तो बड़े काम की बात बता दी। क्या यह प्रकृति बंधन हम सारे पेड़ों पर लागू नहीं कर सकते? आखिर सभी पेड़ हमें कुछ न कुछ अवश्य देते हैं। उनकी भी सुरक्षा और संरक्षा इस भावनात्मक बंधन से हो सकती है।''– इस बात से श्रेया के साथ ही राहुल भी चहक उठा।

माँ ने उठते हुए कहा–''अवश्य हो सकती है बच्चो!'' वह बाहर निकलकर मोहल्ले के बच्चों के साथ चर्चा करने चल पड़े। सभी बच्चे ज्ञानू दादा के बरामदे में जमा हुए। ज्ञानू दादा मोहल्ले के बच्चों के सवालों और समस्या समाधान के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

श्रेया– राहुल ने ज्ञानू दादा से माँ के साथ हुई चर्चा को दोहराते हुए कहा कि– ''दादा जी ! शहर में हर वर्षा ऋतु में प्रशासन, स्वयंसेवी संगठनों और छात्रों द्वारा तमाम पेड़ पौधे लगाए जाते हैं, किन्तु साल बीतते उनमें से अनेक पेड़ पौधे सूख जाते हैं या फिर थोड़े बड़े होते ही कट जाते हैं। उनके देखभाल की ठीक व्यवस्था नहीं होती, जिससे पौधारोपण का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता।''

''तो क्या कहना चाहते हो तुम लोग?''– ज्ञानू दादा ने आश्चर्य से पूछा।

।। बाल प्रस्तुति ।।

दो दोस्त

लघुकथा : शांतनु गुप्ता

एक लड़का था। वह पहले दिन विद्यालय गया। उसकी माँ उसे छोड़कर आ गई। वह बहुत डर रहा था। वह धीरे–धीरे रोने लगा। थोड़ी देर बार उसे एक दोस्त मिला। वह भी रो रहा था। थोड़ी देर बाद दोनों जोर–जोर से रोने लगे। फिर दोनों ने एक दूसरे के आंसू पोछे। वे दोनों चुप हो गए और हंसने लगे। उनकी टीचर ने देखा तो खूब ताली बजाई।

• जबलपुर (म.प्र.)

''दादा जी! यदि हम रक्षाबंधन को वट सावित्री पर्व की भांति प्रकृति के प्रति आस्था से जोड़ दें तो इनकी देखरेख आसानी से हो सकती है।''

''अरे वाह! यह तो बहुत अच्छा विचार है, किन्तु होगा कैसे?'' दादा जी के साथ ही मोहल्ले के सारे बच्चे उत्साहित हो उठे।

''एक उपाय है– हम क्यों न अपने चुने हुए किसी वृक्ष को रक्षा सूत्र में बाँधकर उसकी देखभाल का जिम्मा ले लें और ऐसा ही करने के लिए दूसरों को भी प्रेरित करें।''

''अवश्य बच्चो! ये तो क्रांतिकारी विचार है। इसे तो बड़ों का भी खूब समर्थन मिलेगा।''

''तो फिर देर किस बात की? इसकी योजना अभी से बना लेते हैं। शुभारंभ हम अपने मोहल्ले के पेड़ों से करेंगे।''

बच्चों की बैठक जम गई। कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार होने लगी। ज्ञानू दादा ने इस अभियान के प्रचार प्रसार और बड़ों को भी जोड़ने का जिम्मा उठा लिया। दो तीन बैठकों में सब कुछ सुनिश्चित हो गया। ....और फिर इस बार के रक्षाबंधन की बहुप्रतीक्षित सुबह भी आ गई।

नहा धोकर लक–दक कपड़ों में तैयार बच्चों ने पहले घर में रक्षाबंधन मनाया। एक दूसरे को राखियाँ बांधकर मिठाइयाँ खिलाई, फिर थाल सजाकर मोहल्ले में निकल पड़े। उनके पीछे ज्ञानू दादा और अन्य लोग भी निकल पड़े। पेड़ों को राखियाँ बाँधी जाने लगी। त्यौहार सचमुच मंगलमय हो उठा था। दादा जी ने कुछ पत्रकारों को भी बुलवा लिया था। कैमरों के फ्लैश चमक उठे। तालियाँ बजने लगी। अगले दिन की सुबह एकदम नई लग रही थी। ये सारा अभियान अखबारों और टीवी में छा गया था। श्रेया और राहुल समेत मोहल्ले के बच्चे इस अभियान के नायक बन गए थे।

• ऊंचाहार (उ.प्र.)

कविता : आदर्श ठाकुर

उस देश को भारत कहते हैं

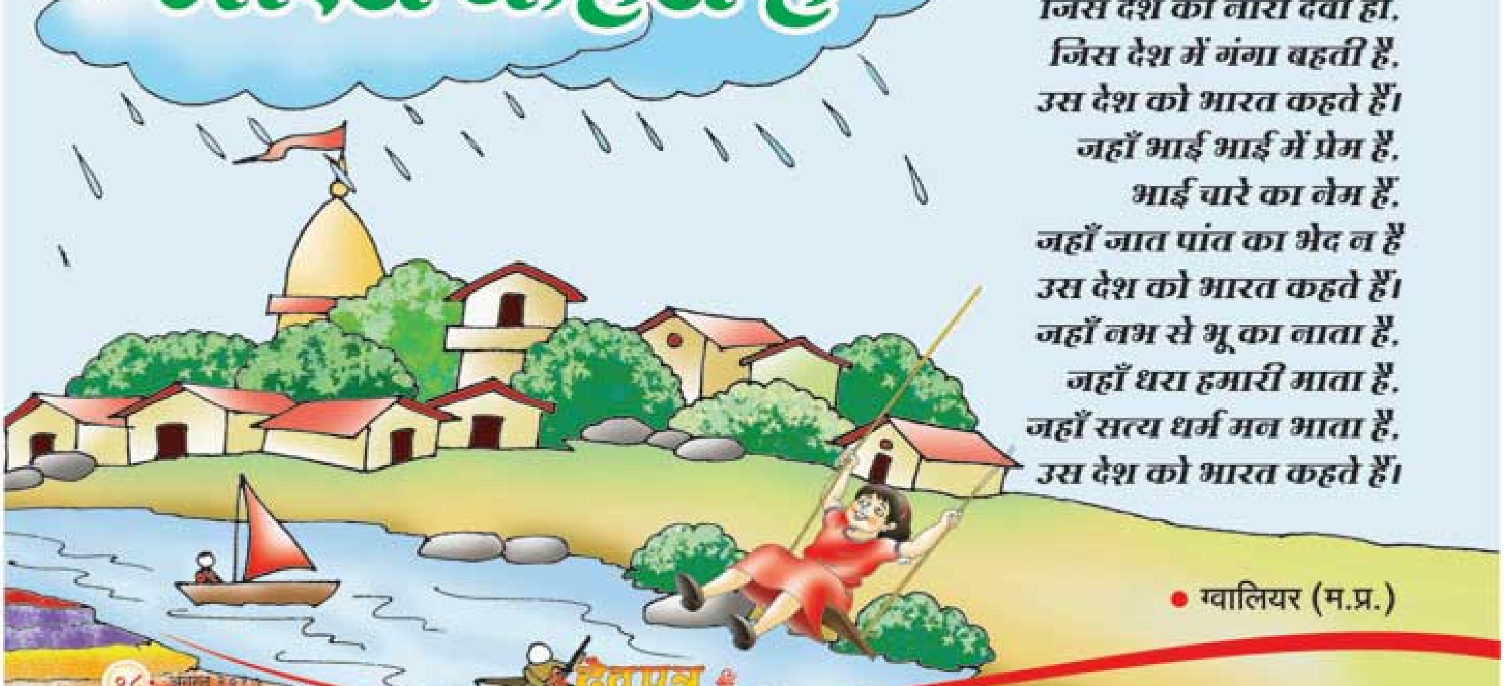

जिस देश का कण कण सोना हो,
जिस देश की नारी देवी हो,
जिस देश में गंगा बहती है,
उस देश को भारत कहते हैं।
जहाँ भाई भाई में प्रेम है,
भाई चारे का नेम है,
जहाँ जात पांत का भेद न है
उस देश को भारत कहते हैं।
जहाँ नभ से भू का नाता है,
जहाँ धरा हमारी माता है,
जहाँ सत्य धर्म मन भाता है,
उस देश को भारत कहते हैं।

• ग्वालियर (म.प्र.)

पितांबरी उत्पादों के संग, बढ़ाइये सावन में
पूजा का आनंद !
नई पितांबरी®
अब पाँच धातुओं के लिए !
पितांबरी®
दीप शक्ती™
तिल के गुणों से युक्त
दिये का तेल
• सात्विकता बढ़ानेवाला
• ज्योती लंबे समय तक प्रज्वलित रखनेवाला
• कालिख ना पकडनेवाला
For Diya & lamps only
Deep shakti
मनभावन सुगंध में
The Original & No.1 Brand
NEW
Pitambari®
Shining Powder
200 g
With Extra Power
& Pleasant Fragrance
COPPER
BRASS
ALUMINIUM
IRON
SILVER
१ली., ५०० और २०० मिली में उपलब्ध
१०, ३०, ५०, १००, २००, ५०० ग्रॅ. व १ किलोमें उपलब्ध
CIN : U24239MH1989PTC051314
देवभक्ती
नक्षत्र सिरिज अश्विनी
नक्षत्र सिरिज रोहिणी
नक्षत्र सिरिज रेवती
नक्षत्र सिरिज कृत्तिका
4 in 1
Made With NATURAL Extract
पितांबरी®
देवभक्ती®
अगरबत्ती
फूलों की 'प्राकृतिक' सुगंध
जो खुशियाँ फैलाएं।
22 , 100 ग्राम, 4 in 1 & 7 in 1 में उपलब्ध
Pitambari Products Pvt. Ltd. Thane Tel: 022-67035555, CRM No.: 022-6703 5564, 5699,
Toll Free: 180030701044 visit www.pitambari.com/shop

पन्द्रह अगस्त

काव्य नाटिका : सुरेन्द्र अंचल

पात्र

दो बालक

एक बालिका

एक बालक– पन्द्रह अगस्त का दिन महान
समवेत – स्वतंत्रता का हुआ विहान
एक– पन्द्रह अगस्त
समवेत – जय–जय
एक– मुक्ति पर्व
समवेत – जय–जय
एक – कोटि कंठों की एक ही लय
समवेत – हिंसा पर यह अहिंसा की जय
नेपथ्य (गीत स्वर)–दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल।
साबरमती के संत, तूने कर दिया कमाल।
दूसरा बालक – मनोज भैया हमें बताओ।
क्या है सच्ची बात सुनाओ।
एक साल में दो बार क्यों
तिरंगा ध्वज हम फहराते?
छब्बीस जनवरी मनाई तो थी
फिर पन्द्रह अगस्त यह क्यों मनाते?
एक (हँसकर) – अरे बुद्धू!
दोनों अलग–अलग राष्ट्रीय पर्व हैं
दोनों पर ही हमें गर्व है।
दूसरा– यह क्यों?
राष्ट्रपर्व है दो क्यों?
एक– छब्बीस जनवरी दिवस गणतंत्र।
ओ स्वतंत्रता दिवस है पन्द्रह अगस्त।
बोलो हर्ष–हर्ष।
समवेत – जय जय।
एक – पन्द्रह अगस्त।
समवेत – जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!!
एक – यह स्वतंत्रता पर्व!
समवेत – जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!!

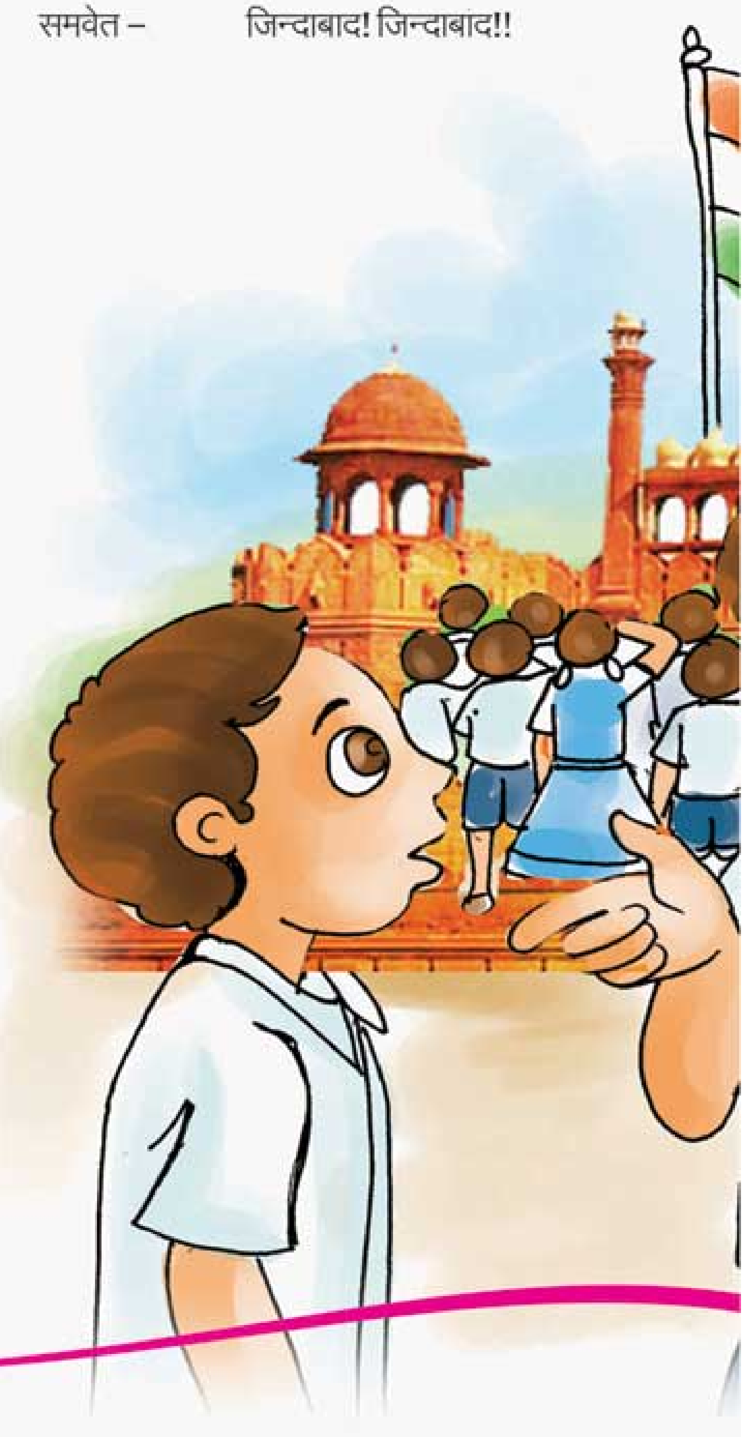

बालिका – तमल भैया हमें छुनाओ ना,
आजादी ती बात बताओ?
एक (उच्छ्वास) – हाँ, हाँ, क्यों नहीं। तो लो सुनो।
तुम्हें पुरानी बात बताएं
वह सन चौदह सौ इट्ठाणू था,
कुछ पुर्तगाली व्यापारी आए,
सोने की चिड़िया था भारत
डच, अंगरेज शिकारी आए।
केरल के राजा 'जमेरिन' से

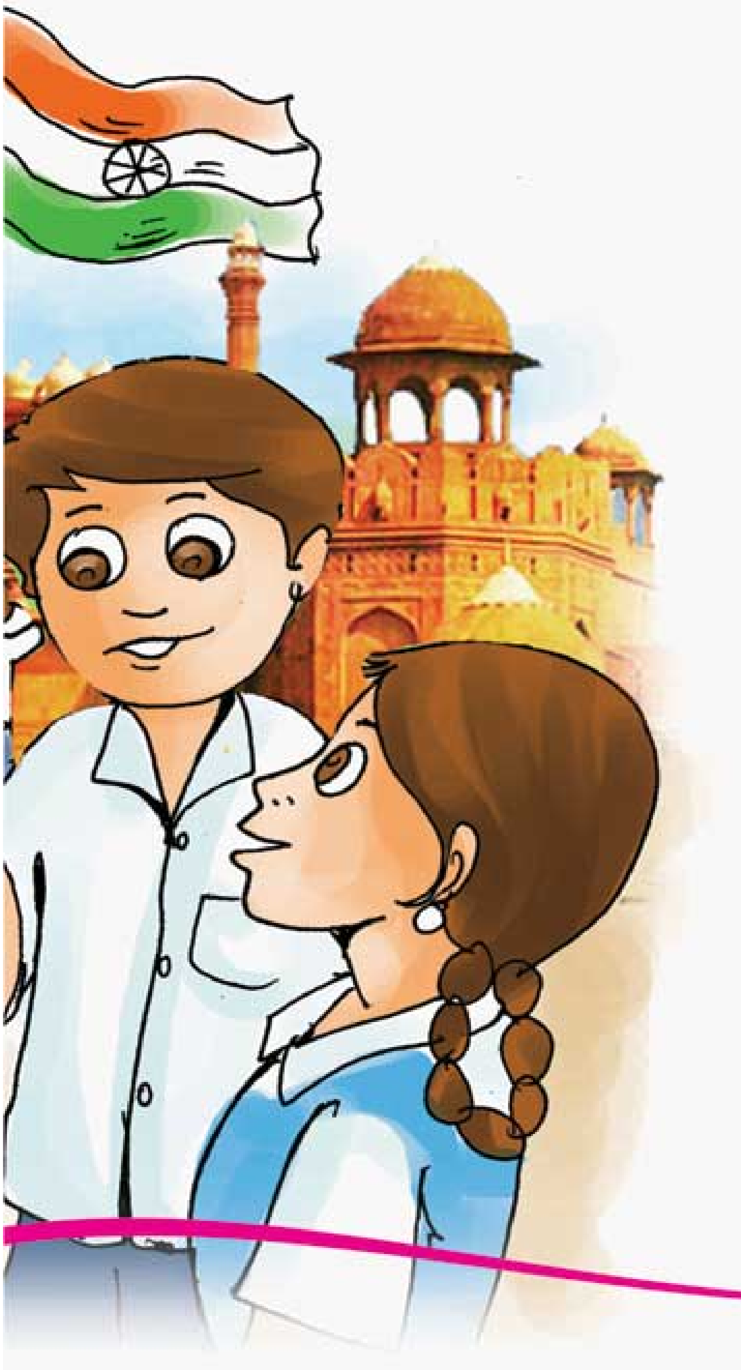

मात्र व्यापार की आज्ञा पाए।
ये विदेशी भारत क्या आए
शासक बन कर हम पर छाए।
बालिका – अच्छा ! अले यह तो धोखा
उनतो हमने त्यों नई लोका?
दूसरा – अरे कमाल है–
मुट्ठी भर व्यापारियों ने यों
पूरे देश को जीता कैसे?
भारत तो वीरों की धरती
इसका बल यो रीता कैसे?
एक– शाबास! कितनी अच्छी पूछी बात।
वीर भले हो कितने ही हम
पर भाई–भाई जहां झगड़ते
वहां तीसरे की बन आती।
गीदड़ भी आ राज जताते।
व्यापारी का रूप छोड़ कर
फूट डाल दी यहां परस्पर
यों शासक बन वे हम पर छाए।
एक दूसरे को लड़वा कर।
दूसरा – हां, बोलो फूट बहुत ही बुरी है भाई,
हमने अपनी स्वतंत्रता खोई।
समवेत – हाँ... फूट बहुत ही बुरी है भाई,
हमने अपनी स्वतंत्रता खोई।
एक– हाँ, ये अंग्रेज व्यापारी क्या आए।
शासक बन कर हम पर छाए।
बालिका – अच्छा! अले, सलासल धोका।
उनतो हमने क्यूं नई लोका?
बोलो भैया!
फिर हुआ त्या?
एक– हाँ, अंग्रेजी शासक की माया।
दुनिया भर में छा गई ऐसे।
पर भारत तो थी सोनचिरैया।
पिंजरे में बंदी, छोड़े कैसे?
जिसका सूरज अस्त न होता

	ऐसी थी वह गौरी सत्ता
	कैसे, फिर से आजादी पाए
	कैसे तोड़े कड़ी दासता।
(निसांस)	ओफ्फो...! बीत गए फिर वर्ष अनेक
	धीरे धीरे समझ सके हम
	फूट छोड़ कर होना एक।
	संगठन में शक्ति भारी।
	यों दासता हम देंगे फेंक।
दूसरा –	हाँ फूट बहुत बुरी है भाई
	हमने भी स्वतंत्रता खोई
बालिका–	बोलो भैया...
	फिल हुआ त्या?
एक–	जो होना चाहिए वही हुआ।
	भारत की जनता गई जाग।
	धीरे, आजादी की सुलगी आग।
	सन् सत्तावन की क्रांति भभकी।
	गौरी सत्ता सहसा चमकी।
	झांसी रानी, तात्या टोपे
	अहमद, जफर और भोंसले
	अंग्रेजी सत्ता थराई
	छाती पर चढ़ मूंग दले।

• ब्यावर (राज.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

सबको सुखी बनाना सीखो

कविता : शिवानी ठाकुर

रोज सबेरे सूरज कहता, जग को रोशन करना सीखो।
निशदिन चलता पवन कह रहा, नहीं थको श्रम करना सीखो
लदे फलों से वृक्ष कह रहे, पर उपकारी बनना सीखो।
फूल सदा कहते हैं तुमसे, कष्टों में मुस्काना सीखो।
बादल कहते तुम उदार बन, सबको सुखी बनाना सीखो।
सरिता कहती बिना रुके तुम, अपनी राह बनाना सीखो।
कश्ती कहती हमें देखकर, संघर्षों में बढ़ना सीखो।
सागर कहता तुम अगाध बन, गुण रत्नों के देना सीखो।
देखो चांद सितारे कहते, जीवन धवल बनाना सीखो
झर-झर झरते झरने कहते, जीवन सरल बनाना सीखो।

• पचोर (म.प्र.)

ऐसे बना भारत

लघु कथा : मनोहर चमोली 'मनु'

'दिल्ली चलो।' यह समाचार जिसने सुना, वह चल पड़ा था। पंजाब राज्य ने पूछा– '' आप कौन? तमिलनाडु ने जवाब दिया– ''मुझे तमिलनाडु कहते हैं। भरत नाट्यम् मेरे यहाँ फलता–फूलता है।'' पंजाब ने बताया– ''मैं पंजाब हूं। गुरुनानक की जन्मभूमि।'' दोनों चलने लगे। किसी ने पुकारा– ''इधर आओ। मैं केरल हूँ। चाय, काफी, जूट, रबर और काजू की फसलें लहलहाता हूँ।'' सब आगे बढ़ गए। उन्हें उत्तर प्रदेश मिला। कहने लगा– ''मैं राम और कृष्ण की जन्म भूमि हूं। ताजमहल भी मेरे यहां है।'' तभी बर्फीली हवा चलने लगी। उत्तराखण्ड सामने खड़ा था। कहने लगा– ''चौंक गए न! मैं हिमालय की गोद में बसा हूं। बर्फ से ढकी चोटियां मुझ पर ही टिकी हैं। मुझे उत्तराखण्ड कहते हैं।''

जो भी मिलता, अपनी शान में कुछ न कुछ कहता। खुद को बड़ा और दूसरों को छोटा बताने की होड़ मचने लगी। कई राज्य एक दूसरे से मिल रहे थे। अचानक महाराष्ट्र बोल पड़ा– ''मेरे जैसा कोई नहीं। मेरे शान के क्या कहने । मुंबई मेरी राजधानी है।'' उत्तर प्रदेश ने ललकारा– ''सबसे अधिक आबादी का भार मैं उठाता हूं। मैं सबसे खास हूँ।''

राजस्थान ने टोका– ''चुप रहो। सबसे अधिक भूमि मेरे पास है। मीरा और राणा प्रताप जैसे कई वीर मेरी पहचान हैं। मेरा एक–एक कण साहस, बलिदान और वीरता से भरा है।'' तभी केरल हंसने लगा–''मेरी भूमि का आम जन पढ़ा–लिखा है। सौ फीसदी। कोई है मेरे जैसा?''

शोर बढ़ने लगा। तभी एक नन्हा सा राज्य बीच में आ गया। किसी ने पूछा तो वह बोला–''मैं दिल्ली हूं। तुम सब की राजधानी।'' कोई चिल्लाया–''हमारी तो अपनी राजधानी है। तुम हमारी राजधानी कैसे हो सकती हो?'' नन्हा राज्य बोला– ''पहले पास तो आओ।'' पूरब से आए राज्य एक ओर इकट्ठा होने लगे। पश्चिम से आए राज्यों ने भी ऐसा ही किया। उत्तर और दक्षिण के राज्य भी नजदीक आने लगे। मध्यप्रदेश खुशी से चिल्ला उठा। बोला– ''मेरे चारों ओर आओ।'' सब मध्य प्रदेश की ओर बढ़ने लगे। सबने एक नया आकार बना लिया। सब खुश हो गए। दिल्ली ने कहा– ''यह हुई न बात। आप सब ने मिलकर भारत बना लिया है।'' जम्मू काश्मीर ने कहा– ''और तुम हमारी राजधानी बन गई हो। है न? चलो, आओ गाएं। खुशियां मनाएं।'' हर कोई एक से बढ़ कर एक संगीत सुनाने के लिए तैयार हो चुका था।

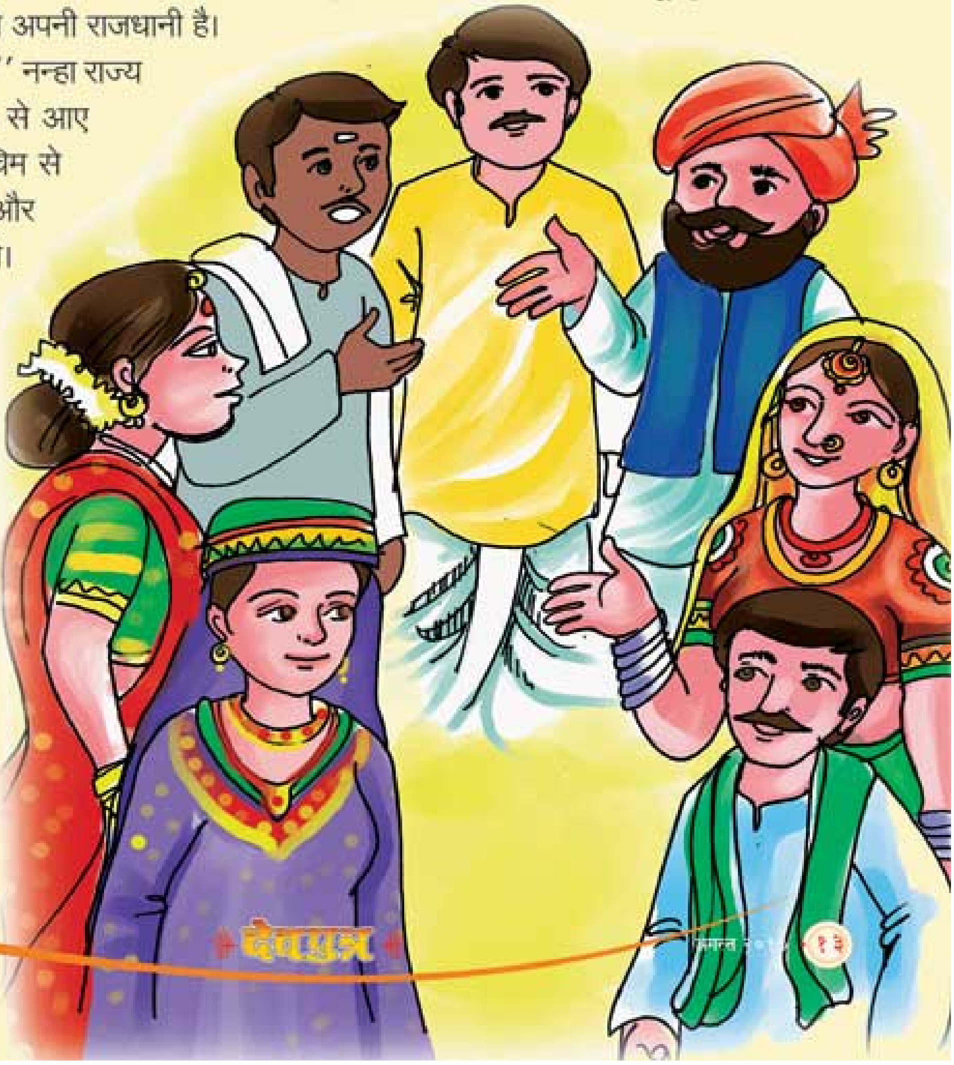

• पौड़ी (उत्तराखण्ड)

उमा ने दिखाया

चादर के हटते ही शिबिर में खलबली मच गई। चादर के नीचे अप्पा नहीं सो रहे थे। अप्पा के आकार में तकिए व अन्य कपड़े जमे थे। गंगासिंह तथा उसके सभी १६ सैनिक भी गायब थे। कप्तान ब्राउनी को यह समझते देर नहीं लगी कि उनके साथ जोरदार छल हुआ है। सोचने का अधिक समय उसके पास नहीं था। अप्पा को पकड़ने हेतु उसने सभी दिशाओं में सैनिक दौड़ाए मगर उसके सभी प्रयास व्यर्थ गए। कोई कुछ नहीं बता पाया। उसे लगा कि अप्पा के लोगों की बनाई योजना पूर्णतः सफल हो गई थी।

घटना मई १८१८ के प्रारम्भ की है। अंग्रेज छलबल से एक के बाद एक रियासत को अपने साम्राज्य में मिलाते जा रहे थे। ऐसे ही एक अभियान के अन्तर्गत अंग्रेजी सेना की एक टुकड़ी ने नागपुर के किले में बलपूर्वक प्रवेश किया था। अंग्रेजी सेना के मंतव्य को कोई समझ पाता उससे पूर्व ही सेनानायक कप्तान ब्राउनी ने वहां के शासक अप्पा साहब को गिरफ्तार किया और उन्हें लेकर तुरंत वहां से निकल गया। कप्तान ब्राउनी अप्पा साहब को लेकर जल्दी ही इलाहाबाद पहुँचना चाहता था। उसे भय था कि मार्ग में अधिक समय लगने पर अप्पा साहब के लोग परेशानी खड़ी कर देंगे।

विश्वस्त तथा बहादुर सैनिकों का दल साथ होने के बावजूद कप्तान ब्राउनी बहुत ही सर्तकता से काम ले रहा था। तभी गंगासिंह नामक एक योद्धा ने नेतृत्व में १६ भारतीय लोगों की अंग्रेजी सैनिक टुकड़ी वहां पहुँची। उन्हें अचानक अपने करीब देख कप्तान ब्राउनी एक बार तो घबरा गया मगर तुरंत ही संभल गया। उसने उन सैनिकों को आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया। इस पर दलनायक गंगासिंह निर्भीकता से आगे बढ़ा तथा सम्मान सहित एक पत्र कप्तान ब्राउनी को पकड़ाया। पत्र इलाहाबाद के दुर्गरक्षक कैप्टन डेसम्यूर की ओर से कप्तान ब्राउनी को लिखा गया था। पत्र पढ़कर ब्राउनी कुछ क्षण के लिए विचारों में खो गया। पत्र की सत्यता की जाँच हेतु कप्तान ब्राउनी ने गंगासिंह से कई प्रश्न किए तथा उत्तरों से संतुष्ट हो उस सैनिक टुकड़ी को अपने खास दल में शामिल कर लिया था।

एक दो दिन तो उन नए सैनिकों को कोई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी नहीं सौंपी गई। उस सैनिक टुकड़ी के सैनिकों के कार्य व्यवहार तथा निष्ठा ने दो दिन में ही सबको अपना बना लिया। तीसरे दिन से ही उन्हें जिम्मेदारीपूर्ण कार्य सौंपे जाने लगे थे। अब वे सैनिक अप्पा से भी मिल सकते

कहानी :विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

कमाल का जादू

थे। अंग्रेजों के स्थान पर इन्हें रात्रि के पहरे पर भी लगाया जाने लगा था।

मई माह का दूसरा सप्ताह बीतने को था। तेज गर्मी के कारण अंग्रेज सैनिकों का बुरा हाल था। कप्तान ब्राउनी का दल जबलपुर से लगभग ३० मील दूर राचूर पर डेरा डाले विश्राम कर रहा था। गंगासिंह के ६ सैनिक अप्पा के

शिबिर के पहरे पर थे। शेष १० अन्य जिम्मेदारियां निभा रहे थे। प्रातः ३ बजे पहरेदार सैनिकों की ड्यूटी बदली, ६ अंग्रेज सैनिकों ने पहरे का काम संभाल लिया था। दिन निकलते ही कूच करने की तैयारियां प्रारम्भ हो गई थीं। सूर्योदय के पूर्व स्वयं उठ जाने वाले अप्पा, सूर्य निकलने के बहुत देर बाद तक, आराम से सोए थे। इस पर कप्तान ब्राउनी ने अप्पा को जगाने का आदेश दिया। कई आवाज देने पर भी अप्पा नहीं बोले तो एक सैनिक ने होले से उनकी चादर खींची थी। चादर के नीचे अप्पा नहीं थे।

जाँच करने पर पाया गया कि रात्रि में ९ बजे गंगासिंह के सैनिकों के पहरे पर आते ही १० सैनिक पूर्व निर्धारित योजनानुसार अप्पा को लेकर शिबिर से निकल गए थे। अप्पा के पलंग पर उनका पुतला-सा बना उसे चादर से ढक दिया गया। जिससे दूर से देखने पर लगे की अप्पा सो रहें हैं। सैनिक बिस्तर पर पड़े पुतले का पहरा देते रहे। इससे अप्पा और उनके साथियों को दूर निकलने का समय मिल गया। प्रातः ३ बजे पहरा बदला। पहरे पर आए अंग्रेज सैनिकों ने पुतले को अप्पा समझा और शांति से पहरा देते रहे। इस बीच गंगासिंह के शेष सैनिक भी चुपचाप शिबिर से निकल गए।

कप्तान ब्राउनी पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाते हुए मुकदमा चलाया गया। कप्तान ब्राउनी ने अदालत को बताया कि उसकी योजना एकदम ठीक थी। अप्पा को पकड़ने पर नागपुर एकदम अनाथ-सा हो गया था। अप्पा की १९ वर्षीय पत्नी उमाबाई एकदम असहाय हो गई थी। योजना की प्रारंभिक सफलता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता था कि अप्पा की गिरफ्तारी का कुछ भी विरोध नहीं हुआ था। कैप्टन डेसम्यूर के पत्र के कारण ही १६ सैनिकों को साथ लिया था। उसी से सब गड़बड़ हुई थी।

''क्या कह रहे हो तुम? तुम जैसे जिम्मेदार अधिकारी से ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं की जा सकती मिस्टर डेसम्यूर! एक ओर तुम कह रहे हो कि पत्र पर हस्ताक्षर तुम्हारे ही हैं दूसरी ओर कह रहे हो यह पत्र

तुम्हारा नहीं है। इस बात का क्या अर्थ है...?'' मुख्य न्यायाधीश ने अंग्रेज अधिकारी कैप्टन डेसम्यूर से जानना चाहा। डेसम्यूर को समझ नहीं आ रहा था कि यह सब क्या माया है? किसने व कब यह पत्र उससे प्राप्त किया। पत्र को नकली बताना भी मुश्किल था। अदालत के सामने सिर नीचे कर खड़ा रहना ही उसने उचित समझा।

पत्र की सत्यता जानने के लिए न्यायालय के कैप्टन डेसम्यूर को बुलाया था। कैप्टन डेसम्यूर ने पत्र देखकर न्यायालय में उपरोक्त जवाब दिया था। उसके जवाब से न्यायालय संतुष्ट नहीं था। उसके जवाब ने कैप्टन ब्राउनी की समस्या को कुछ कम कर दिया था। न्यायालय का मानना था कि जिस पत्र को देखकर कैप्टन डेसम्यूर भी नकली नहीं कह पा रहा तो कैप्टिन ब्राउनी का उसे सत्य मानना स्वाभाविक था। कैप्टिन ब्राउनी को अदालत ने मुक्त कर बहाल कर दिया गया।

न्यायालय सच नहीं निकाल पाया था। अन्दर का सच यह है कि अंग्रेजों ने जिसे अनुभवहीन बेचारी महिला मानकर अनदेखा किया था उसी ने घर बैठे अपने पति तथा नागपुर के शासक अप्पा साहब को मुक्त करवा लिया था। अप्पा को मुक्त कराने की योजना की रचना व क्रियान्वयन उनकी १९ वर्षीय पत्नी उमादेवी ने की थी। अप्पा के चुने हुए सैनिकों ने बहुत कम समय में जिस नाटकीय अन्दाज में इसे पूरा किया गया वह आज भी लगभग असंभव लगता है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य तो नागपुर के एक जादूगर ने किया था। जादूगर त्वरित गति से इलाहाबाद पहुँचा तथा कैप्टन डेसम्यूर के परिवार को जादू के खेल दिखाकर प्रसन्न कर दिया । बाद में कैप्टन डेसम्यूर को सम्मोहित कर प्रशंसा पत्र के बहाने कैप्टन ब्राउनी के नाम एक महत्वपूर्ण पत्र लिखवा लिया था। पत्र में गंगासिंह व उसके सैनिकों को अत्यंत विश्वसनीय, आज्ञाकारी व बहादुर बताते हुए सेवा में लेने को कहा गया। बहादुर रानी उमा बाई की सूझबूझ को आज भी सम्मान के साथ याद किया जाता है।

• पाली (राज.)

गणेश जी के नाम ढूंढो

बच्चों, गणेश जी के प्रिय भोग मोदक में गणेश जी के १३ नाम छिपे हैं। इन्हें सीधे, उल्टे, आड़े-खड़े में ढूंढना है। ध्यान रहे दो मोदक मूषक महाराज ने जरा बाजू में कर दिए हैं इसलिए दो नाम जरा बाजू में ढूँढना।

• राजेश गुजर

(उत्तर इसी अंक में)

कविता : डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

ब्रज दर्शन की रेल

चलती ब्रज दर्शन की रेल
राधारानी नाम है इसका
चलती रेलमपेल।।

यह गोकुल है, लीला जिसमें
करते थे नंदलाला
मटकी फोड़ दही बिखराते
हंसती थी ब्रजबाला
ऐसे ही करते रहते थे
नटखट पन के खेल।।
चलती ब्रज दर्शन की रेल।

जहाँ विराजीं राधारानी
नाम गाँव बरसाना
नंदगांव भी यहीं पास,
था रहता आना-जाना
ब्रज की धरती प्रेम भरी है
राधा माधव मेल
चलती ब्रज दर्शन की रेल।

कैसे सुन्दर हैं ब्रज के वन
लो वृन्दावन आया
ऐसा लगता वेणु बजाता
कान्हा भू पर आया
रंभा-रंभा कर लोट रही हैं
गउएँ ठेलम ठेल
चलती ब्रज दर्शन की रेल।

एक से एक अनोखे देखो
मंदिर वृन्दावन के
रंग बिहारी जी, गोविन्द जी
कान्हा ठाकुर सबके
राधा वृन्दावनेश्वरी है
कृष्ण कन्हैया छैल
चलती ब्रज दर्शन की रेल।

छुक् छुक् रेल चली आगे को
बहती जमुना मैया
बसा इसी के तट पर मथुरा
जन्में जहाँ कन्हैया
कंस मार दुःख दूर किया था
अवतारी के खेल
चलती ब्रज दर्शन की रेल।

• नोएडा (उ.प्र.)

सूरज

कविता : ममता असाटी

रोज सबेरे सूरज है आता,
नभ में है लाली फैलाता,
अंधकार को दूर भगाता।
किरणों के उपहार लुटाता
जन जन को हर रोज जगाता,
सब जग कामों में लग जाता।
अनुपम दृश्य हमें दिखलाता।
अनुशासन का पाठ पढ़ाता।
रोज सबेरे सूरज आता।
आ अनमोल धूप फैलाता।
धूप में है ऊर्जा अपार,
जिनसे चलते यंत्र हजार।
रवि किरणें जल के संग मिलकर
बीजांकुर के खोले द्वार।
करवाती प्रकाश संश्लेषण
जल का यही वाष्पीकरण
जीवाणुओं का कर संहार,
ये करती जीवन संचार।
दिन के ढलते संध्या की गोदी
में छुपकर सो जाता सूरज।
रजनी का आगमन है होता
नभ है चंदा तारे बोता
सौंप इन्हें तब जिम्मेदारी
सपनों में खो जाता सूरज
पुनः सबेरे आता सूरज
नए रंग दिखलाता सूरज।।

• इन्दौर (म.प्र.)

सबसे अच्छा तिरंगा

चित्रकथा : देवांशु वत्स

वैसे तो समस्त देवतागण पूजनीय होते हैं, परन्तु एक बार की बात है देवताओं में परस्पर विवाद हो गया कि उन सभी में सर्वश्रेष्ठ पूज्य कौन हैं? जब कोई निष्कर्ष नहीं निकला तो सभी देवता एक स्थान पर एकत्रित होकर लोक पितामह ब्रह्मा जी के पास पहुँचे। बूढ़े ब्रह्मा जी अपने कार्य में पूर्णयिता व्यस्त थे। उन्हें सृष्टि निर्माण से फुरसत ही नहीं थी। पंचायत के लिए समय निकालना बहुत कठिन था। अपना कार्य करते–करते ही उन्होंने देवताओं की मन से पूरी बात सुन ली और यह निर्णय सुना दिया– ''जो पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके सबसे पहले मेरे पास आ जाएगा, वही सर्वश्रेष्ठ एवं प्रथम पूज्य माना जाएगा?''

अब क्या था ? देवराज इंद्र अपने ऐरावत हाथी पर चढ़कर दौड़े। अग्निदेव ने अपने प्रिय भेड़े को भगाया। धन कुबेर जी ने अपनी सवारी ढोने वालों को तेज दौड़ने की आज्ञा दी। वरुणदेव का वाहन था मगर, अतएव उन्होंने समुद्री मार्ग पकड़ा। सभी देवतागण अपने–अपने वाहनों को दौड़ाते हुए चल दिए। सबसे पीछे रह गए गणेश जी। एक तो उनका भारी भरकम शरीर और दूसरे छोटा वाहन मूषक। उन्हें लेकर बेचारा चूहा कितनी देर तक दौड़ता? गणेश जी के मन में प्रथम पूज्य बनने की बड़ी उत्कंठा थी। अतः अपने को सबसे पीछे देख वे उदास हो गए।

संयोग की बात, उसी समय सदैव पर्यटन में रहने वाले देवर्षि नारद जी अपनी खड़ाऊ खटकाते, वीणा बजाते, भगवद्–गुण गाते उधर से निकले। गणेश जी को उदास देखकर नारद जी को दया आ गई। उन्होंने पूछा– ''हे पार्वतीनन्दन! आज आपका मुखमण्डल उदास क्यों है?''

गौरीनन्दन गणेश जी ने उन्हें अपनी पूरी समस्या बता दी। देवर्षि नारद जी हँस दिए और बोले– ''आप तो जानते ही हैं कि माता साक्षात् पृथ्वी होती है और पिता परमात्मा स्वरूप होते हैं। इसमें भी आपके पिता उन परमतत्व के ही भीतर तो अनन्त–अनन्त स्थित हैं।''

गणेश जी को अब और कुछ सुनना समझना नहीं था। वे सीधे कैलास पर्वत पहुँचे और अम्बा पार्वती की

।। गणेश चतुर्थी : २९ अगस्त ।।

बुद्धिबल ही सर्वश्रेष्ठ

कहानी :डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

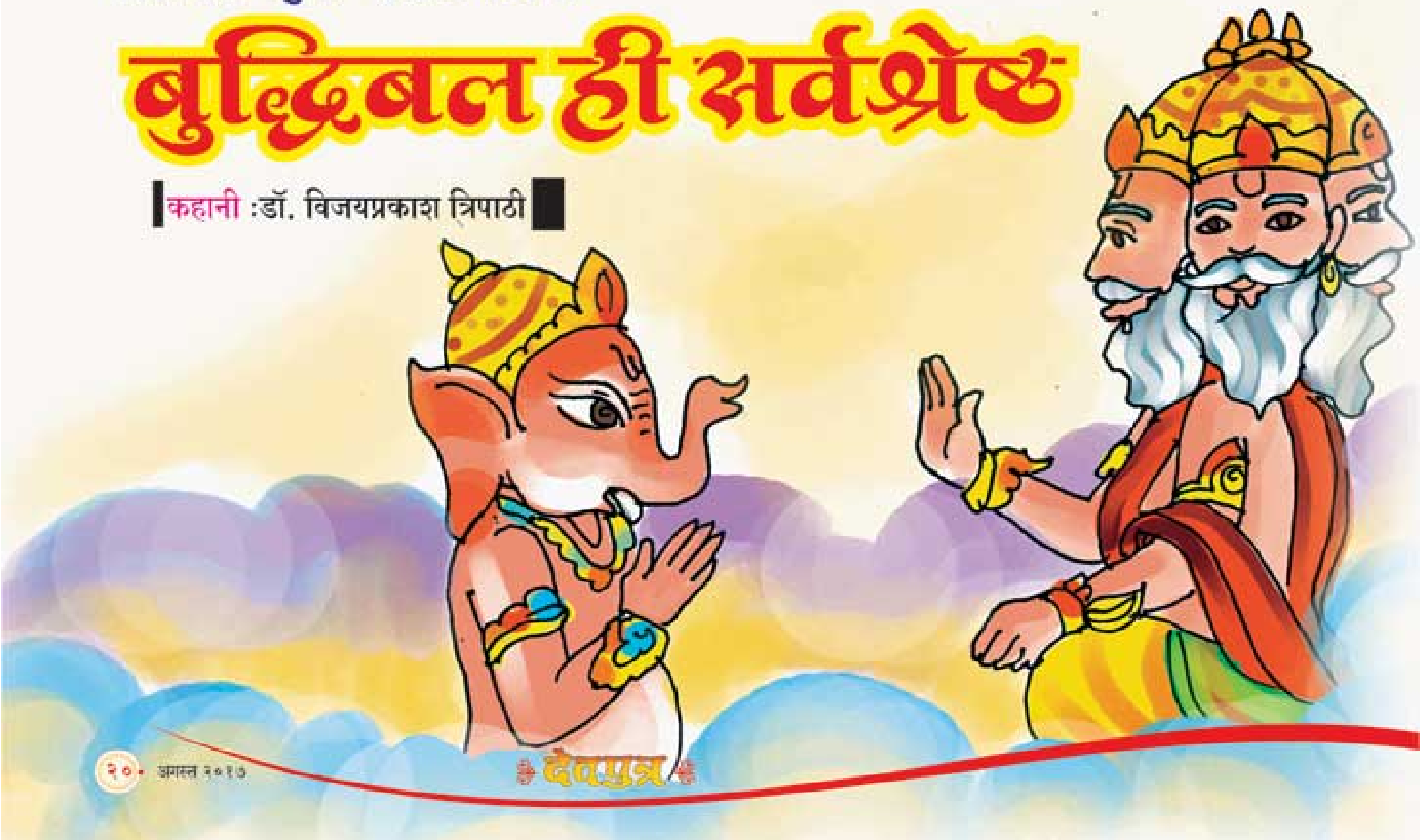

अंगुली पकड़कर छोटे शिशु की भांति अपनी ओर खींचने लगे। कहने लगे–''अम्बा! पिताजी तो समाधि में तल्लीन हैं, पता नहीं उन्हें उठने में कितने युग बीतेंगे, आप ही चलकर उनके वाम पार्श्व में कुछ क्षण के लिए बैठ चलो न माता! चलिए, कृपया उठिए।''

अम्बा पार्वती हँसती हुई जाकर अपने ध्यानस्थ पतिदेव के निकट बैठ गईं, क्योंकि उनको मंगलमूर्ति कुमार इस समय कुछ पूछने –बताने की स्थिति में नहीं थे, वे उतावली में थे और मात्र अपनी बात मनवाने का आग्रह कर रहे थे।

गणेश जी ने भूमि में लेटकर माता–पिता को प्रणाम किया, फिर अपने वाहन चूहे पर बैठे, उनकी सात बार प्रदक्षिणा की। माता–पिता की प्रदक्षिणा करके पुनः साष्टांग प्रणाम किया और माता कुछ पूछे, इसके पूर्व उनका मूषक गणेश जी को लेकर ब्रह्मलोक को चल दिया। वहाँ ब्रह्मा जी को अभिवादन करके वे चुपचाप बैठ गए। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने एक बार उनकी ओर देख लिया और अपने नेत्रों से ही जैसे स्वीकृति दे दी?

बेचारे देवतागण अपने वाहनों को दौड़ाते पूरे वेग से पृथ्वी की प्रदक्षिणा पूर्ण करके एक के बाद एक ब्रह्मलोक पहुँचे। जब सब देवतागण एकत्र हो गए तो ब्रह्मा जी ने निर्णय दिया, ''श्रेष्ठता न शरीर बल को दी जा सकती है, न वाहन बल को, श्रद्धा समन्वित बुद्धि बल ही सर्वश्रेष्ठ है। गणेश जी अपने को अग्रेसर सिद्ध कर चुके हैं।''

देवताओं ने पूरी बात सुन ली और तब चुपचाप गणेश जी के सम्मुख सभी ने मस्तक झुका दिया। देवगुरु बृहस्पति ने उसी समय कहा– ''सामान्य माता–पिता का सेवक और उनमें श्रद्धा रखने वाला भी पृथ्वी प्रदक्षिणा करने वाले से श्रेष्ठ है, फिर गणेश जी ने जिनकी प्रदक्षिणा की है, वे तो विश्वमूर्ति हैं, इसे कोई अस्वीकार कैसे करेगा?''

• **कानपुर (उ.प्र.)**

जावली की जीत

महाबलेश्वर, मकरन्दगढ़, मंगलगढ़ और घरघाट की ऊंची पहाड़ियों से घिरा जावली का दुर्ग था। अत्यधिक वर्षा के कारण, सारा क्षेत्र जंगल से भरा था जिसमें सैकड़ों भयंकर पशु मुक्त घूमा करते थे। जावली का दुर्गपाल उन दिनों मोरे था जो आदिल शाह का प्रतिनिधि था और शाह ने उसे 'चन्द्रराव' की उपाधि दे रखी थी।

शिवाजी महाराज की स्वतंत्र हिन्दुराष्ट्र की स्थापना की आकांक्षा उन दिनों रूप ही ले रही थी और उनके अधिकार में उस समय मात्र चार-पांच दुर्ग ही थे। उन्होंने सोचा कि यदि मोरे अपनी जागीर हमारे क्षेत्र में मिला ले तो हमारी शक्ति में वृद्धि हो जाएगी और मोरे को फिर भी किलेदार माना जाता रहेगा।

चन्द्रराव वैसे अच्छा ही आदमी था। किन्तु धीरे-धीरे उसके मन में लालच पैदा होने लगा और उसने एक दिन गुजन गांव में देशमुख की पदवी ग्रहण कर ली। शिलाकर, जिन्होंने शिवाजी महाराज के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध किए थे, वास्तविक देशमुख थे। कुछ लोगों ने शिवाजी के विरुद्ध शिलाकर के कान भरने शुरू कर दिए। शिवाजी को पता चला तो उन्होंने शिलाकर को एक पत्र लिखा।

मुझे खबर लगी है कि कुछ लोगों ने मेरे खिलाफ तुम्हारे मन में यह संदेह उत्पन्न कर दिया है कि मैं तुम्हारा देशमुख पद छीनना चाहता हूँ। ऐसे लोगों ने यह भी कहा बताया जाता है कि मैं तुम्हारी जान के पीछे पड़ा हूँ। यह सब गलत और भ्रामक है। ऐसी कोई बात नहीं है। कृपया किसी दिन आकर मिलो कि मामला साफ हो जाए।

चन्द्रराव शिवाजी का शिलाकर के प्रति समर्थन

पसंद नहीं करता था। किन्तु वह मौके की तलाश में था। उन्हीं दिनों शिवाजी को समाचार मिला कि रंगो त्र्यम्बक बड़के ने एक महिला के प्रति दुर्व्यवहार किया है। शिवाजी प्रत्येक महिला को माता के समान पूज्य मानते थे। रंगो को जब खबर मिली कि शिवाजी उसका कुकृत्य जान गए हैं तो वह भागकर चन्द्रराव की शरण में जा पहुंचा।

इतना ही नहीं, शिवाजी ने जब और कोई कार्यवाही नहीं की तो चन्द्रराव की हिम्मत खुल गई। उसने शिवाजी की जागीर के एक भाग रोहिड़े को आक्रमण करके ले लिया। उसने चिखाली ग्राम के राम जी पटेल और उसके पुत्र लूमा जी की हत्या करवा डाली। शिवाजी अपनी क्षमाशीलता के कारण फिर भी नहीं बोले तो चन्द्रराव और भी उद्दण्ड हो गया। शिवाजी ने उसे कई बार चेतावनी दी। दण्डित करने की धमकी भी दी मगर वह नहीं माना।

तब शिवाजी ने अपने सलाहकार कान्हो जी जेठे, हैबतराव, शिलाकर, संभाजी कावजी, कोण्ढालकर, कण्डल नायक और रघुनाथ पंत को बुलाया और बातचीत के बाद तय किया कि चन्द्रराव को अब और अधिक क्षमा नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा– ''यद्यपि मैं अपने लोगों के विरुद्ध कार्यवाही नहीं करना चाहता किन्तु इस आदमी की कार्यवाहियाँ अत्यंत आपत्ति जनक हो रही हैं, अतः हमें जावली विजय करनी ही होगी।

चन्द्रराव मोरे कुशल योद्धा था किन्तु आक्रमण के कुछ ही दिनों बाद उसे पता चल गया कि शिवाजी का विरोध कर पाना कठिन होगा। अब वह भागकर रेडी में जा छिपा। शिवाजी ने जावली पर अधिकार कर लिया। चन्द्रराव के एक सेनाध्यक्ष मुरार जी बाजी को शिवाजी ने अपने साथ मिला लिया और रेड़ी को रवाना हो गए।

रेड़ी का दुर्ग दुर्गम पहाड़ियों के ऊपर बना था। किन्तु वहां घेरा डाल कर शिवाजी की सेना वहां महीनों पड़ी रही। तो अन्ततः चन्द्रराव को आत्मसमर्पण करना पड़ा। शिवाजी ने उसे एक बार फिर क्षमा कर दिया और जावली का दुर्ग पर फिर उसे सौंप दिया।

किन्तु कुटिल व्यक्ति का स्वभाव टूटता नहीं है। सांप बिना काटे रहता ही कब है सो चन्द्रराव ने बाजी घोरपड़े के साथ मिलकर बीजापुर के सुलतान की तरफ से शिवाजी के विरुद्ध षड़यंत्र किया। पता चलते ही शिवाजी ने धावा बोला दिया। चन्द्रराव फिर भागा, फिर पकड़ा गया और उसे फांसी दे दी गई। उसके दोनों पुत्र मार डाले गए और जावली और रेड्डी शिवाजी की जागीर में आ गए।

(निरंतर अगले अंक में)

संस्कृति

प्रश्नमाला

- किस राक्षसी ने लंका के प्रवेश द्वारा पर लघु रूप हनुमान जी को रोका था?
- महाभारत के युद्ध में एक कौरव पाण्डवों की ओर से लड़ा था। दासी से उत्पन्न यह धृतराष्ट्र का पुत्र युद्ध में जीवित भी बच गया। वह कौन था?
- ईरान के एक नगर पसारगढ़ी (पर्सिपोलिस) में भारतीय देवताओं के किस वाहन की विशाल प्रतिमा लगी है?
- पहाड़ों में प्रवाहित होने के पश्चात पतित-पावनी गंगा किस स्थान से मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है?
- अठारह महापुराणों में सबसे बड़ा कौन -सा है तथा इसमें कितने श्लोक हैं?
- सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के बाद किस महान सम्राट ने सम्पूर्ण भारत को संगठित कर राष्ट्र को सामर्थ्यशाली बनाया?
- वृक्ष भी देखते-सुनते हैं तथा दुःख-सुख अनुभव करते हैं, यह महाभारत के किस पर्व में बताया गया है?
- १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के किस महानायक पर खूब लड़ी मर्दानी वह तो... कविता लिखी गई?
- अपने हठ के लिए प्रसिद्ध महावीर हम्मीर देव चौहान किस राज्य के अधिपति थे।?
- दशहरा महाकुंभ भारत के किस राज्य में आयोजित होता हैं?

(साभार : पाथेय कण)

(उत्तर इसी अंक में)

आपकी पाती

देवपुत्र का मई २०१७ का अंक मिला। देवपुत्र बच्चों की मनभावन पत्रिका है। यह बच्चों के मानसिक विकास के साथ ही उनमें अच्छी संस्कार भी भरती है। अपनी बात में बच्चों को देश दुनिया की जानकारी देने के साथ ही शिक्षाप्रद बातें भी बतलाई जाती हैं जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है। इस अंक की सभी कहानियाँ एवम् कविताएं बालमन के अनुरूप हैं।

आलेख में तमिलनाडु के विश्व प्रसिद्ध मंदिरों के विषय में पढ़कर बहुत अच्छा लगा। संस्मरण के अंतर्गत श्री अटलबिहारी वाजपेयी के जीवन प्रसंगों को जानकर अच्छा लगता है। हमारे राज्य पुष्प में डॉ. परशुराम शुक्ल के द्वारा काव्यात्मक रूप में विभिन्न प्रांत के पुष्पों की अच्छी जानकारी दी जाती है।

● सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा' कोटा (राज.)

मीठी यादें

आदर्श पत्नी आदर्श पति

संस्मरण : शैवाल सत्यार्थी

अपनी हाजिर जवाबी और विनोदी स्वभाव के लिए भी–अटल जी जग विख्यात हैं। एक खास आयोजन में, एक महिला पत्रकार–अटल जी के अब तक चिर कुँवारे रहने के रहस्य को जानने के लिए, बेहद उत्सुक थी। वह अपने समाचार पत्र में देने के लिए, कुछ जायकेदार–मसाला तलाश रही थी...किन्तु, अटल जी तो बस, अटल थे– टस से मस न हो रहे थे...

हार कर उसे अंतिम प्रश्न उछाला–

–'अभी तक आप अविवाहित क्यों हैं?'

'आदर्श पत्नी की खोज में!' अटल जी ने चुटकी ली।

'क्या वह नहीं मिली?' कुछ हैरानी से पूछा उसने।

'मिली तो थी, किन्तु...' उदास स्वर में उन्होंने कहा– 'उसे भी तो, आदर्श पति की तलाश थी।'

और फिर, उनके चिर परिचित अट्टहास से पूरी महफिल महक उठी चहक उठी।

***

वे भी क्या दिन थे

कई राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं के, अत्यंत कुशल एवं तेजस्वी सम्पादक रह चुके, अटल जी कहते हैं– ''वे भी क्या दिन थे...केवल अपने 'राष्ट्रधर्म', 'पांचजन्य', 'स्वदेश' ही सदैव आंखों के सामने नाचा करते थे। कितनी उत्तम, उत्कृष्ट और सुरुचिपूर्ण सामग्री पत्र में दी जाए– इसी सोच में मन लीन रहता। प्रत्येक ताजा आने वाला अंक, पूर्व अंक से बाजी मारने के लिए होड़ करता रहता था। उसी को संवारने में जुटा रहता था, कब भोर हुई, कब शाम हुई– इसका पता ही नहीं चलता था। खाया कि नहीं खाया, इसकी याद ही नहीं रहती थी। (कार्य के प्रति कैसा अद्‌भुत समर्पण था, अटल जी का।) पाठकों के आए हुए, प्रशंसात्मक–पत्र पढ़कर ही भूख–प्यास मिट जाती थी। पत्र के लिए सामग्री जुटाना, प्रुफ पढ़ना, प्रारूप बनवाना, कार्टून तैयार कराना और बण्डल बांधना (ओफ! यह वह इतिहास पुरुष कह रहा है, नियति जिसके माथे का लेख लिख रही थी– एक स्वर्णिम दिवस तुम्हें, सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधना है... इस देश का महामात्य बनना है।) आदि सब कुछ करता था मैं। इस सभी कार्यों में जो आनन्द प्राप्त होता था, वह शब्दों में व्यक्त नही कर सकता।''

''मैं कोई उपदेश की स्थिति में नहीं हूँ। वे कहते हैं– 'सम्पादक को समाज के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए, और अपने प्रति सच्चा होना चाहिए। आत्मा के विरुद्ध काम नहीं करना चाहिए। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि आत्मा को पहले जीवित रखा जाए।''

***

कँटीली डगर पर : मानवीय संवेदना

''किशन! अभी ८बजे दाल बाजार आ जाओ, रामावतार शर्मा जी के यहाँ...अटल जी के साथ, चुनाव प्रचार के लिए चलना है।'' किशन अर्थात् शैवाल, और फोन करने वाले थे नरेश जौहरी– अटल जी के चुनाव प्रभारी। रामावतार जी ग्वालियर से सांसद थे, उन्होंने अटल जी के लिए त्यागपत्र दिया था। यह १९७१ का वर्ष था।

नाश्ता करके हम लोग कार से चले। पीछे की सीट पर अटल जी, नरेश जी और शिवकुमार शर्मा जी– अटल जी के प्रतिक्षण सुरक्षा मित्र (अंग रक्षक)।

हॉस्पिटल रोड़ पर, आर्टिस्ट कम्बाइन हॉल के मोड़ पर कार मुड़ी ही थी कि सामने श्वेत धोती–कुर्ता में एक भव्य व्यक्तित्व– मेरे मुंह से निकला–''भाई सा. मिलिन्द जी...'' कि तभी अटल जी ने कहा–''कार रोको।''

कार से उतर कर उन्होंने श्री जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द को प्रणाम किया, और कहा– ''विजय के लिए आपकी शुभकामनाएँ चाहिए।''

एक कवि अपने ज्येष्ठ कवि से विजय के आशीष का आकांक्षी था।

'विजयी हों', मिलिन्द जी ने कहा– और आग्रह भी, ''ध्यान रहे, राजनीति की इस कँटीली रपटीली डगर पर कवि हृदय की कोमल मानवीय संवेदना का विस्मरण कभी न होने पाए।'

अटल जी ने उसी क्षण शायद, गाँठ बाँध ली थी– और जीवन पर्यन्त, उस संवेदना को हृदय में संजोए रखा।

• ग्वालियर (म.प्र.)

पहुंचाओ तो जानें

बच्चो,
श्रीकृष्ण जी के इन
सखाओं को
माखन चोर
श्री कृष्णजी तक
माखन
खाने के लिए
पहुँचाओ।

• राजेश गुजर

• महेश्वर (म.प्र.)

विजयश्री

कविता : रामकिशोर शुक्ल 'विशारद'

आपसी कलह के कारण से।
वर्षों पहले परतंत्र हुआ।।
पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालिस
को अपना देश स्वतंत्र हुआ।।
उन वीरों को हम नमन करें।
जिनने अपनी कुरबानी दी।।
निज प्राणों की परवाह न कर
भारत को नई रवानी दी।।
उन माताओं को याद करें।
जिनने अपने प्रिय लाल दिए।।
मस्तक माँ का ऊंचा करने।
को उनने बड़े कमाल किए।।
बिस्मिल, सुभाष, तात्या टोपे।
आजाद, भगत सिंह दीवाने।।
सिर कफन बांध कर चलते थे
आजादी के यह परवाने।।
देश आजाद कराने को जब।
पहना केसरिया बाना।।

तिलक लगा बहनें बोली।
भैया, विजयी होकर आना।।
माताएं बोल रही बेटा।
बन सिंह कूदना तुम रण में।।
साहस व शौर्य पराक्रम से।
मार कर भगाना क्षण भर में।।
दुश्मन को धूल चटा करके
वीरों ने ध्वज फहराया था।।
जांबाजी से पा विजयश्री।
भारत आजाद कराया था।।
स्वर्णिम इतिहास लिये आया।
यह गौरवशाली दिवस आज।
श्रद्धा से नमन कर रहा है।
भारत का यह सारा समाज।।
जय हिन्द हमारे वीरों का।
सबसे सशक्त शुभ मंत्र हुआ।।
पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालिस।
को अपना देश स्वतंत्र हुआ।

• गंगागंज (उ.प्र.)

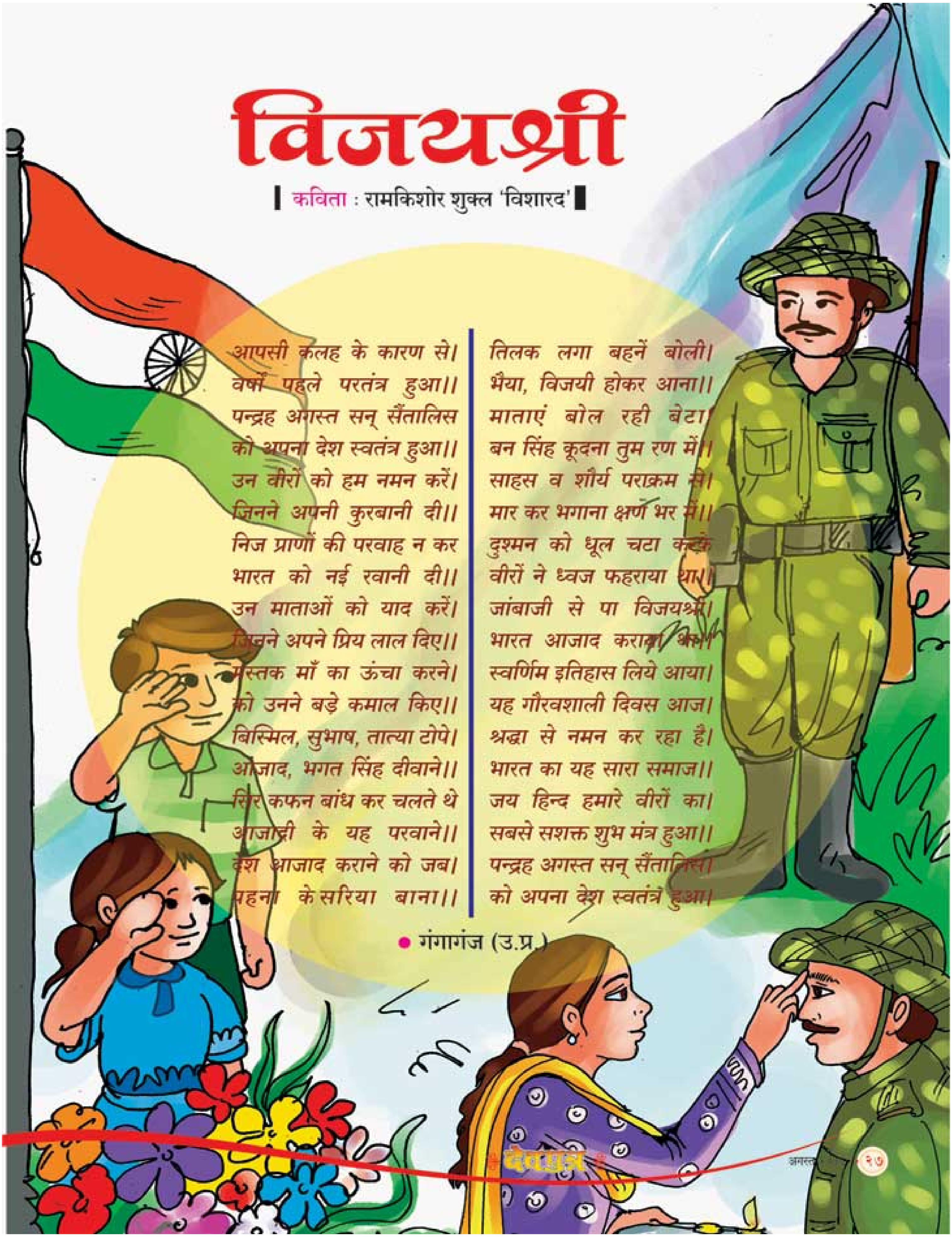

छोटे से बड़ा

माखन चोर की माखन की मटकियों को
जरा छोटे से बड़े क्रम में तो जमाइए।

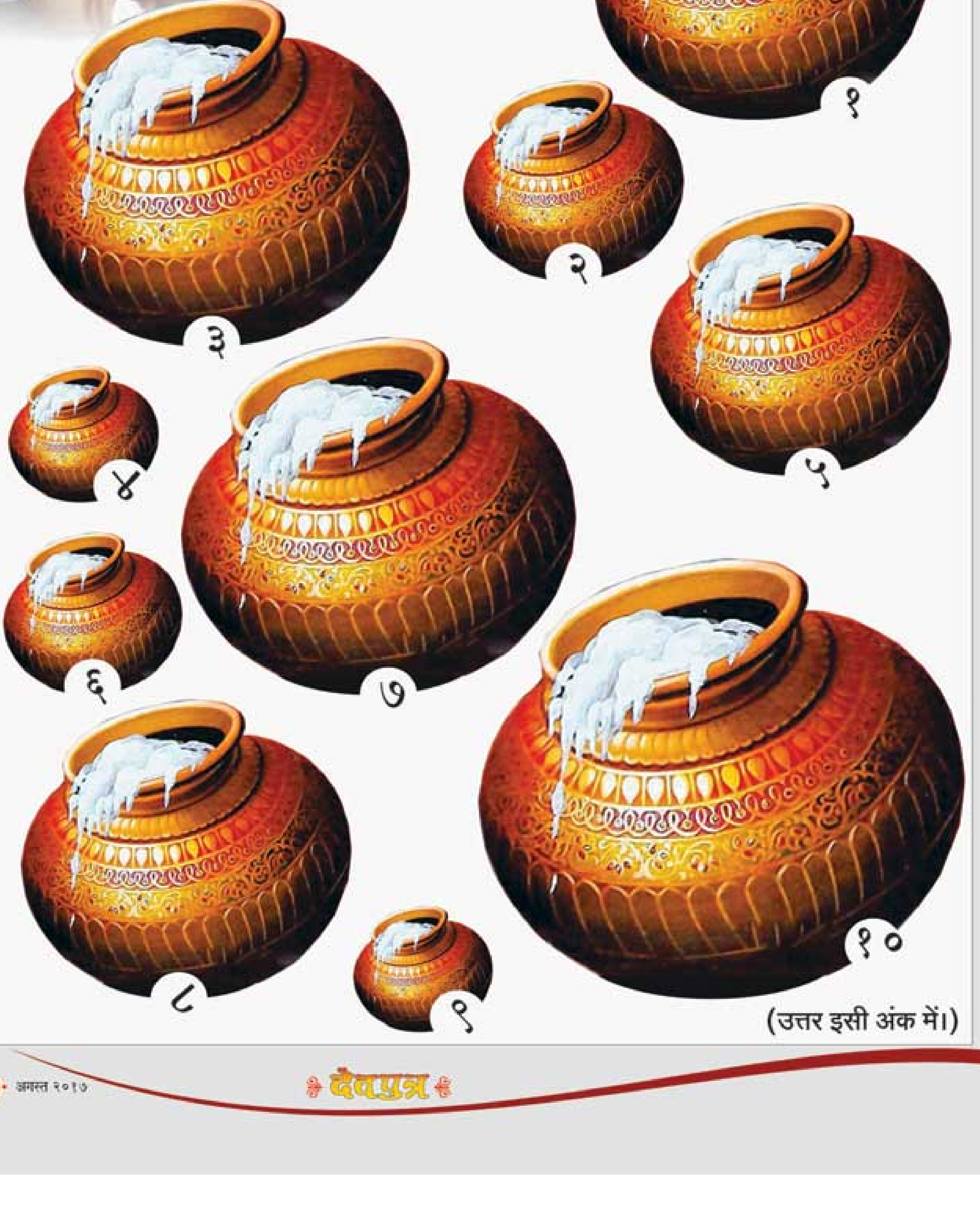

(उत्तर इसी अंक में।)

वह खुश हो उठा

कहानी : डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

बिल्लू रोज सुबह उठता तो एक बार छत पर जरूर जाता। यह उसकी दिनचर्या सी बन गई थी। बिल्लू ने छत पर चिड़ियों के खाने के लिए ज्वार, बाजरा और टूटे चावल के दाने रख छोड़े थे। वह इन दोनों को एक लोहे के बाक्स में रखे हुए था।

छत पर पहुंचकर वह बाक्स में से थोड़े अनाज के दाने निकालता और छत पर बिखेर देता दाने बिखेरने के दस मिनट बाद ही ढेर सारे कबूतर तोते और कुछ घरेलू चिड़ियां दाने खाने आ जाती ऐसे में गिलहरी भी जरूर आती।

बिल्लू इस बात का पूरा ध्यान रखता जैसे ही चिड़ियों के खाने वाला अनाज समाप्त होने लगता वह पिताजी से कहता–''पिताजी, आप जब बाजार जाएं तो चिड़ियों के लिए अनाज जरूर ला दें।''

बिल्लू के माता–पिता भी खुश थे। चलो बिल्लू ने एक पक्का नियम तो बनाया।

अनाज खाते हुए पक्षी को देखकर बिल्लू को बड़ी प्रसन्नता होती। वह खुश हो उठता कि उसकी छत पर इतने सारे पक्षी आते हैं।

बिल्लू की छत

पर एक प्यारा सा सफेद कबूतर प्रत्येक दिन अनाज खाने जरूर आता था। यह कबूतर सारे पक्षियों में एकदम अलग ही दिखता। वह अक्सर पूरी छत पर नाचते हुए, घूम-घूमकर अनाज के दाने अपनी चोंच में लेता। बिल्लू को यह सब बड़ा ही अच्छा लगता।

सफेद कबूतर के बारे में बिल्लू कई बार माँ - पिताजी को बता चुका था।

एक दिन बिल्लू ने छत पर अनाज के दाने बिखेरे तो सारे पक्षी दाने खाने आते गए पर काफी देर तक वह प्यारा सा सफेद कबूतर नहीं आया। बिल्लू चिन्तित हो उठा। उसका मन तमाम प्रकार की आशंकाओं से भर उठा।

वह छत के नीचे आकर माँ से बोला- ''माँ...माँ, आज वह सफेद कबूतर नहीं आया, जो रोजाना अपनी छत पर आता था।''

माँ ने धीरे से कहा- ''बेटा आ जाएगा।''

बिल्लू का मन भारी हो रहा था- ''पर माँ, वह कबूतर दाने डालते ही आ जाता था। आज तो बहुत देर हो गई तब भी नहीं आया।''

माँ ने बिल्लू की परेशानी को समझा वे बिल्लू के साथ छत पर आईं और बोली- ''बिल्लू तुम भी तो अपने दोस्तों के साथ खेलने जाते हो? ''हाँ माँ जाता हूँ''- बिल्लू ने तुरंत जवाब दिया।

बिल्लू की माँ बोली- ''बस, बिल्लू आज तुम्हारा प्यारा दोस्त सफेद कबूतर भी कहीं अपने दोस्तों से मिलने चला गया होगा? तभी वह समय पर नहीं आ सका। उसे भी देर हो गई''

अभी बिल्लू और उसकी माँ सफेद कबूतर, जिसे बिल्लू प्यार से ''टिन्नी'' कहता था, के बारे में बात ही कर रहे थे, तभी कहीं से तेज चाल में उड़ता आ गया। अपने ''टिन्नी'' को देखकर बिल्लू खुश हो उठा।

उसकी आंखों से अब चिन्ता के भाव गायब हो चुके थे।

• ग्वालियर (म.प्र.)

सही उत्तर

गणेश जी के नाम ढूंढो

(१) गणेश
(२) गणपति (८) भूपति
(३) गजानन (९) विनायक
(४) गजकर्ण (१०) लंबोदर
(५) गणाध्यक्ष (११) विघ्ननाशन
(६) एकदंत (१२) भालचंद्र
(७) सुमुख (१३) धूम्रकेतु

छोटे से बड़ा

९, ४, ६, २, ५, १, ८, ३, ७, १०

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) लंकिनी (२) युयुत्सु (३) वृषभनंदी
(४) हरिद्वार (५) स्कन्द पुराण ८११०० श्लोक
(६) सम्राट समुद्र गुप्त (७) शांति पर्व
(८) महारानी लक्ष्मीबाई (९) रणथम्भौर
(१०) जम्मू कश्मीर

।। बाल प्रस्तुति ।।

फूल

कविता : शाम्भवी गुप्ता

फूल फूल तुम प्यारे हो
सब दुनिया से न्यारे हो
अच्छी अच्छी खुशबू देते
हमको बहुत भाते हो

• सिंगरौली (म.प्र.)

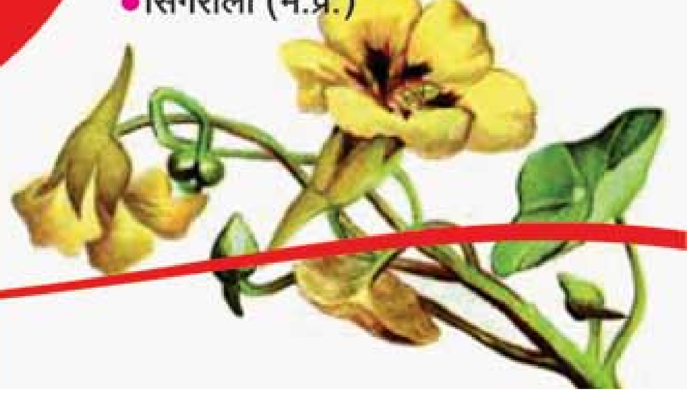

नया दोस्त

चित्रकथा : देवांशु वत्स

।। बाल प्रस्तुति ।।

हम हाथी नहीं इंसान हैं

कहानी : जाह्नवी खत्री

एक बार की बात है, एक गांव में सर्कस मण्डली तमाशा करने के लिए आई थी, यूं तो सर्कस हर किसी को पसंद होता है, परन्तु छोटे-छोटे बच्चों को वह सर्कस अत्याधिक पसंद होता है। इसलिए उस गांव के सभी बच्चे अपने माता-पिता से सर्कस दिखाने की जिद करने लगे, उसी दिन पिंकू के दोस्त ने उसे यह सूचना दी तो पिंकू ने अपने बापू से जिद की, उन्हें बेटे की बात माननी पड़ी। पिता पुत्र सर्कस देखने गए। तभी सिद्धांत (पिंकू के पिताजी) की नजर वहां किसी पर पड़ी, जिसे देखकर वे हैरानी एवं विचार में पड़ गए। असल में पिंकू के बापू सिद्धांत पिंकू का हाथ पकड़कर बस उस सर्कस के किनारे बाहर की ओर एक छोटी-सी जगह पर बंधे हाथियों को देखकर विचार में पड़ गए थे। उन्होंने देखा कि इतने विशालकाय जीव इन छोटी-छोटी रस्सियों से बंधे हैं ऐसा कैसे सम्भव हैं? तभी वहां से एक बूढ़ा व्यक्ति गुजर रहा था। उसने सिद्धांत की ओर देखा। और

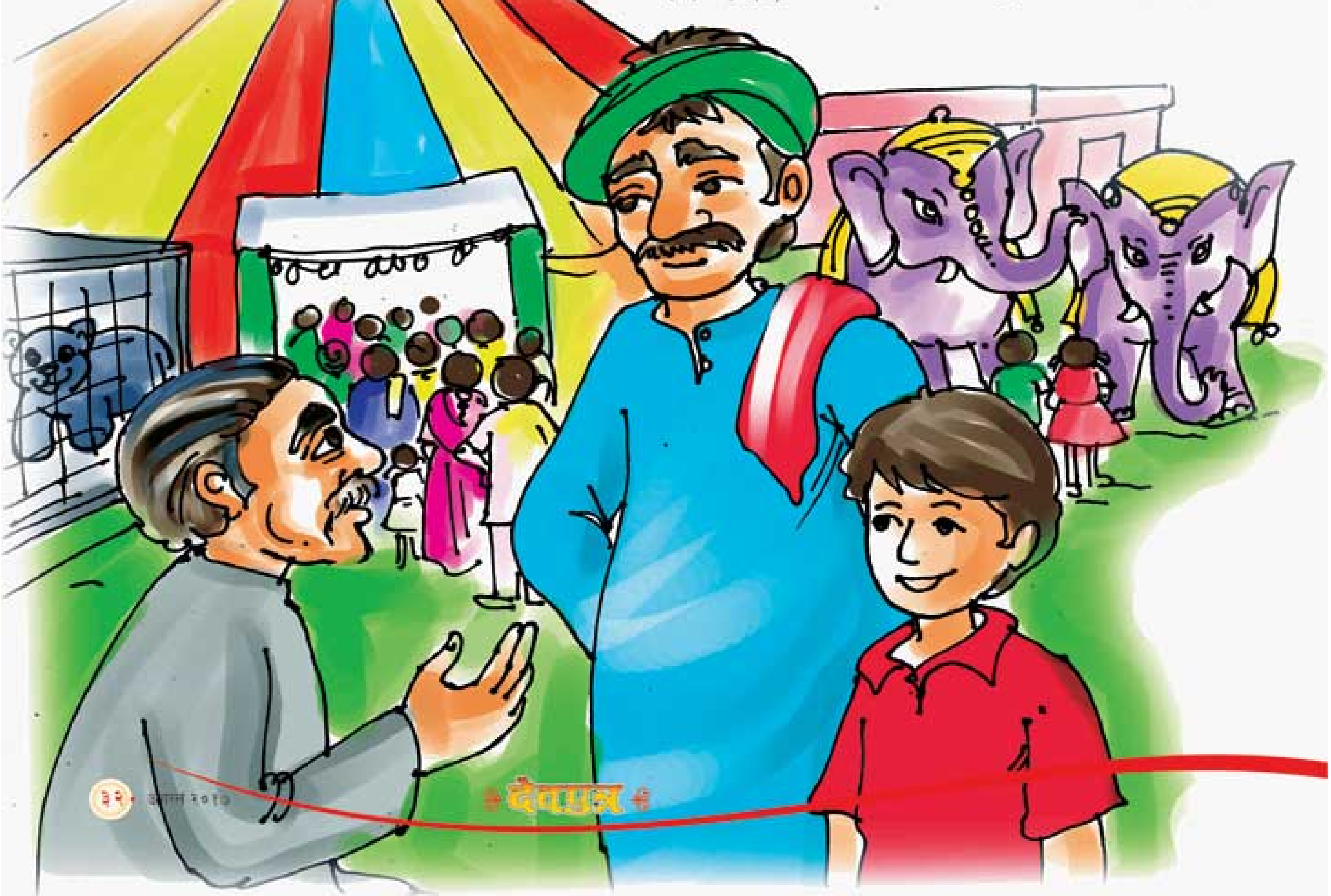

उससे पूछा कि-"क्या हुआ बेटा?" तभी तमाशा शुरु हो गया और पिंकू अपने पिताजी सिद्धांत से तमाशा देखने के लिए अन्दर जाने की जिद करने लगा। और वह बिना कुछ कहे अन्दर चले गए।

जब तमाशा चल रहा था, उसी दौरान पिंकू ने गौर किया कि इतने विशालकाय जीव इन छोटे इंसानों की बात क्यों मानते हैं? ये चाहे तो इन व्यक्तियों को मारकर भाग सकते हैं पर वह ऐसा क्यों करते हैं?

तमाशा खत्म हुआ। सभी ने अपने अपने घरों हेतु प्रस्थान किया पर पिंकू के मन में वही सवाल था, जब वह बाहर आया तो वह बूढ़े दादा वहीं पर बैठे हुए थे।

तो पिंकू और सिद्धांत बड़ी ही उत्सुकता के साथ दादा के पास गए व उनसे पिंकू व सिद्धांत ने पूछा-"काका काका, मुझे आपसे कुछ पूछना है?"

बूढ़ा व्यक्ति मुस्कुराकर "क्या?"

पिंकू ने पूछा-"मैं अपने पिताजी की हर बात मानता हूं क्योंकि वो मेरे पिता जी हैं पर ये हाथी क्यों इन छोटे-छोटे इंसानों की बात मान लेते हैं?"

बूढ़ा व्यक्ति हंसते हुए बोला-"बेटा! इन हाथियों को बचपन से ही यह सिखाया जाता है व इनमें इस तरह का भाव बचपन में ही जागृत कर दिया जाता है।"

"ओह! तो ये बात है, मुझे तो लगा था ये हाथी हमसे बहुत प्यार करते हैं इसलिए हमारी सभी बातें सुनते हैं व करते भी हैं।"

तभी सिद्धांत बोला- "दादा! जानवर तो इतने बड़े हैं कि आराम से इन छोटी सी रस्सियों को तोड़कर भाग सकते हैं, पर वह ऐसा क्यों नही करते हैं?

"क्योंकि वह हाथी जब छोटे से थे तो इनमें इतनी शक्ति नहीं थी, कि वे इन रस्सियों को तोड़ सकें व भाग सकें इसलिए बचपन में बहुत प्रयासों के बाद भी रस्सी न टूटने पर इनके मन में धारणा बन चुकी है, कि वह यह रस्सियां नहीं तोड़ सकते। इसी तरह इंसान भी कई कार्यों में असफल होने के बाद यह सोच लेते हैं कि वह अब हर कार्य में असफल होंगे और सिर्फ इसी धारणा के कारण किसी भी कार्य को करने की कोशिश ही नहीं करते।"

संतुष्ट हो सिद्धांत बोला-"आपका बहुत बहुत धन्यवाद।"

सिद्धांत व पिंकू घर लौट गए उन्हे जीवन का एक महत्वपूर्ण सूत्र मिला गया था।

सत्यनारायण 'सत्य' को पीएच.डी.

रायपुर (भीलवाड़ा)। युवा बाल साहित्यकार श्री सत्यनारायण 'सत्य' को अपने शोध कार्य के सफलता पूर्वक सम्पादन के बाद पीएच.डी. उपाधि प्रदान की गई है। 'सत्य' ने 'हिन्दी बाल साहित्य के विकास में बालवाटिका पत्रिका की भूमिका' विषय पर डॉ. रामनिवास मानव (हिसार) के निर्देशन में यह शोध किया था। शोध के उपरान्त डी.बी.एच.पी. विश्वविद्यालय, मद्रास द्वारा इन्हें पीएच.डी. की डिग्री प्रदान की गई।

बताओ तो जानें

चाँद मोहम्मद घोसी

भक्त शिरोमणि मीराबाई अपने गिरधर गोपाल के पास भूल-भूलैया के कौनसे रास्ते से पहुँचेगी? बताओ तो जानें।

हमारे राज्य पुष्प

गुजरात का राज्य पुष्प

गेंदा

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत सहित कई देशों में,
गेंदा पाया जाता।
लंका , बर्मा, पाक आदि से,
इसका गहरा नाता।।
उगता अपने आप कहीं यह,
कहीं उगाया जाता।
माला से लेकर सज्जा तक,
काम बहुत से आता।।
छः फुट तक ऊँचे पौधे पर,
फूल निराले खिलते।
पीले, लाल, सुनहरे पीले,
कई रंग में मिलते।।
सभी अंग उपयोगी इसके,
औषधि खूब बनाते,
खून साफ करके शरीर का,
सारे रोग भगाते,
अपने इन्हीं गुणों के कारण,
अमरीका तक आया
लिंकन से लेकर क्लिंटन तक,
सबके मन को भाया।।

• भोपाल (म.प्र.)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (२)

कथाक्षत्र (१)

संवाद : डॉ. देवेन्द्रचन्द्र दास 'सुदामा'

दूसरे रविवार को शंकर मनोरमा और माधव जल्दी ही आम के पेड़ के नीचे बैठ गए। उस दिन दादाजी को आने में थोड़ी देर हुई। क्योंकि उस दिन दादाजी की तबियत ठीक न रहने के कारण विश्राम कर रहे थे। परन्तु उन्होंने देखा कि दादाजी भी धीरे-धीरे आ रहे हैं। तीनों सावधान होकर बैठ गए और नजदीक पहुँचते ही ''राम-राम'' कहकर स्वागत किया। आम के पेड़ के नीचे बेंच पर दादाजी बैठ गए। माधव ने दादाजी से कहा- क्या नानाजी! सुना है कि आपका शरीर ठीक नहीं है क्या हो गया?''

दादाजी - नहीं माधव! इतना खराब नहीं है, थोड़ा कमजोर अवश्य हूँ। गर्मी भी बढ़ रही है न? इसलिए होगा? ठीक हो जाएगा, चिन्ता का कारण नहीं है।

मनोरमा-माधव भैया! हमारे दादाजी का शरीर जब खराब हो जाता है सबसे अधिक चिन्तित हो जाती है माँ। पता नहीं क्यों?

मनोरमा की बात सुनते ही दादाजी की आँखों से आँसू छलकने लगे। इस दृश्य को देखकर तीनों बच्चे चुप हो गए। दादा की मनोदशा समझना उनके लिए कठिन था, क्योंकि उनकी आँखों से ये दुःख के आँसू नहीं, अपितु आनंद के आँसू थे। उसे देखकर मनोरमा की आँखें भी सजल हो गई। दादा ने खांसा और धीरे-धीरे शुरु किया- बेटे उस दिन तुम लोगों ने पूर्वोत्तर भारत के बारे में पूछा था न?

तीनों - जी हाँ।

दादाजी - आज मैं भारत राष्ट्र के उस भूखण्ड के बारे में बताऊंगा। परन्तु सबसे पहले उस खण्ड की स्थिति के बारे में तुम लोगों को अनुभव होना आवश्यक है, इसलिए मैं भारत राष्ट्र का एक मानचित्र यानी नक्शा लेकर आया हूँ तुम लोग ध्यान से देखो।

दादा जी ने मानचित्र खोला। और तीनों बच्चे गौर से देखने लगे, इतने में बहू सावित्री भी आकर बैठ गई। दादा जी ने कहा- देखो यह भारत का पूर्वोत्तर खण्ड है। तुम लोग यह देखो- बंगाल प्रदेश के उत्तर में जो संकरा भूखण्ड है उससे जुड़े हुए हैं प्रांत भारत के शेष भूखण्ड के साथ, देखते हो न?

तीनों- जी हाँ देखते हैं।

मनोरमा- (चिल्लाती हुई) देखो-देखो यह है असम, हाँ हमने ध्यान ही नहीं दिया था। यह है दिल्ली, देखो-देखो.......यह है गाजियाबाद, यहाँ हमारा घर है। असम कितना दूर है हमारे यहाँ से। इतने दूर पर दादाजी इतने दिन तक रहे थे। दादाजी आपको कष्ट नहीं हुआ था क्या?

दादा जी- नहीं बेटा! नहीं। मैं अध्यापक बनकर रहा था। असम के लोग मुझे बहुत प्यार करते थे। विश्वविद्यालय में जो विद्यार्थी पढ़ने आए थे ये भी मुझे बहुत श्रद्धा से देखते थे। असम के गाँव-गाँव में गया था। असम के लोगों के प्रेम और श्रद्धा मैं कभी नहीं भूलूँगा। ठीक है अब देखो। यह असम है न? इसके ऊपर है अरुणाचल प्रदेश और नीचे देखो नागालैंड, मिजोरम और त्रिपुरा।

तीनों- जी हाँ, देख लिया है।

दादाजी - पहले राज्य की संख्या इतनी नहीं थी, यह बाद में इतना बड़ा हुआ।

माधव- नानाजी ! हमारे देश में नगरों, प्रांतों का प्राचीन नाम कुछ अलग थे और आज अलग हो गया है।

पूर्वोत्तर भारत का पुराना नाम कुछ अलग था क्या?

दादाजी – तुमने ठीक ही कहा बेटा! उस प्रांत का पुराना नाम अलग था।

मनोरमा – क्या था दादाजी ?

दादाजी – बताता हूँ। ध्यान से सुनो। तुम लोगों को मैं रामायण की कथा सुनाता था न?

शंकर – जी हाँ दादाजी! रामायण की कहानी याद है।

दादाजी – आज से प्रायः आठ लाख उन्नासी हजार वर्षों पहले रामायण की कथा हुई थी। रामायण युग में इस प्रांत का नाम प्रागज्योतिषपुर। प्रागज्योतिषपुर का अर्थ है, जिस नगर में सर्वप्रथम ज्योतिष की चर्चा हुई थी। वर्तमान के गुवाहाटी नगर ही प्रागज्योतिषपुर था। ज्योतिष शास्त्र के आधार हैं सूर्य के साथ नवग्रह। गुवाहाटी नगर के बीच में एक पहाड़ है, जिस पर आज भी नवग्रह मंदिर हैं। जिसमें नव ग्रहों की पूजा अर्चना प्रतिदिन होती है। गुवाहाटी में कई संस्थाएँ, कॉलेज आदि हैं जो प्रागज्योतिष नाम से हैं।

माधव – उसके पश्चात क्या नाम हुआ नानाजी ?

दादाजी – बताता हूँ। इसके पश्चात् इस विशाल क्षेत्र का नाम हुआ कामरूप। आज से पाँच हजार वर्ष पहले कामरूप राज्य भारत का महत्वपूर्ण राज्य था। तुम लोग महाभारत की कहानी जानते हो न?

शंकर – क्यों नहीं दादा जी? आपने ही तो सुनायी थी।

दादाजी – यह बताओ तो महाभारत के सबसे प्रमुख चरित्र क्या हैं?

माधव– युधिष्ठिर है।

दादा जी ने माधव की तरफ देखा...

माधव – अर्जुन है, युधिष्ठिर नहीं।

मनोरमा ने धीरे से कहा– नहीं दादाजी! मैं श्रीकृष्ण को ही सबसे महान चरित्र मानती हूँ।

दादाजी – ठीक है बेटी! श्री कृष्ण महाभारत की

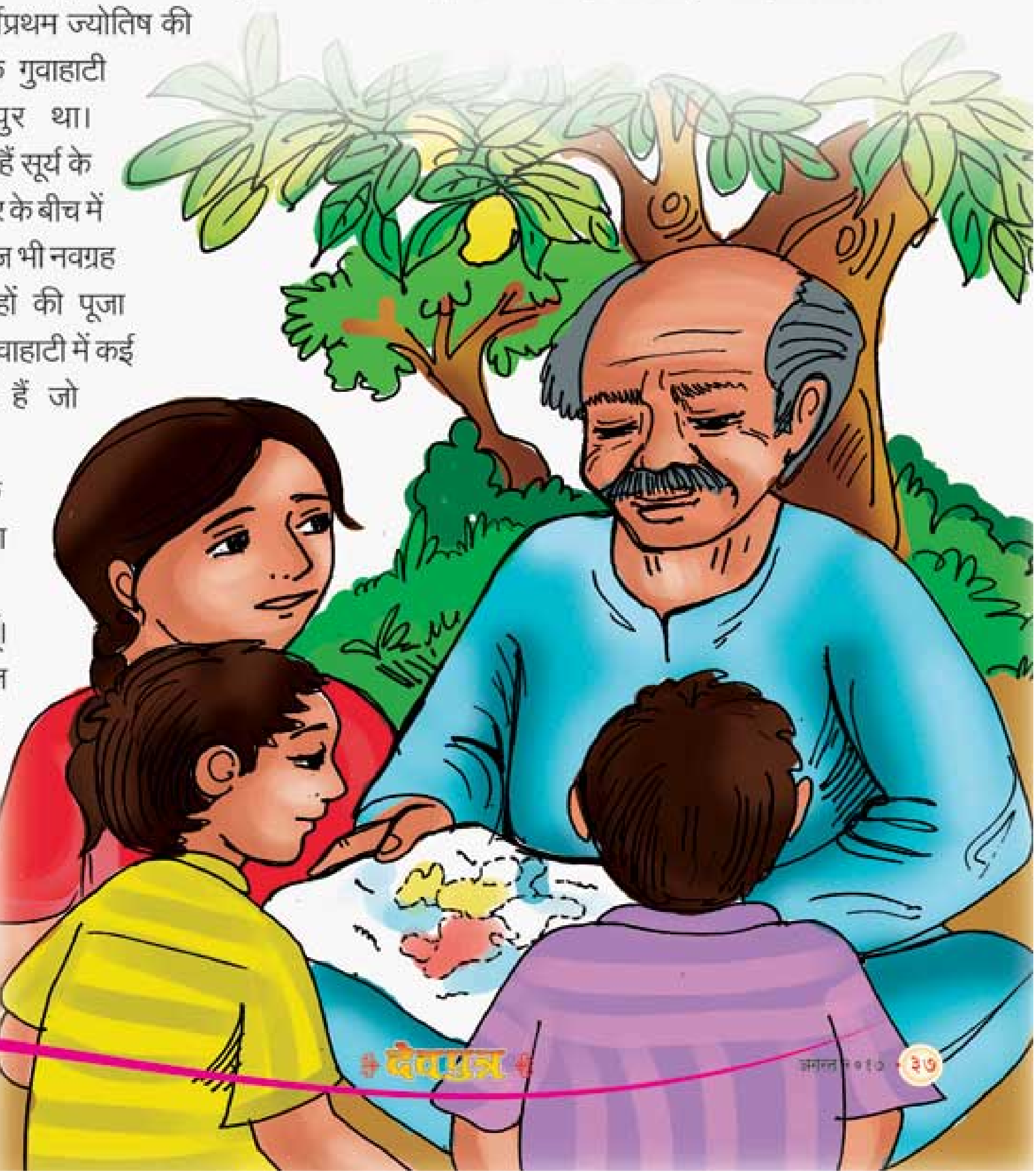

धुरी हैं। श्री कृष्ण को कई बार कामरूप जाना पड़ा था। भीम और अर्जुन भी कामरूप गए थे। भीम ने कामरूप की हिडिम्बा से विवाह किया था और अर्जुन ने उलुपी और चित्रांगदा से शादी की थी।

माधव– दादाजी! आप इतनी सुन्दर मनोरम और रोचक कहानी हमको सुना रहे हैं, इतनी जानकारी आप को कैसे हुई?

दादाजी – मैं चालीस वर्ष असम में रहा। वहाँ का साहित्य मैंने पढ़ा, वहाँ की लोककथा और लोक विश्वास की कहानियाँ मैंने सुनी थीं। उन सबसे मेरा बहुत लाभ हुआ। इन कहानियों से तुम्हारा लाभ नहीं होगा क्या?

मनोरमा – दादाजी? आप कहानियों का भंडार हैं। आपसे कहानियाँ सुनकर हमें बहुत लाभ हुआ है। उस दिन शाला में अध्यापिका ने हमारी कक्षा में विद्यार्थियों को रामायण की कथा सुनाने को कहा था, परन्तु कोई विद्यार्थी सुना नहीं पाया। हम तीनों ने ही सुनाई थी हमारी कथा सुनकर अध्यापिका ने पूछा कि 'हमने कहाँ से सीखा इन कहानियों को।' तब मैंने कहा 'हमारे दादाजी से कहानी सुनने का अवसर मिला है।'

दादाजी – प्राग्ज्योतिषपुर का नाम बाद में कामरूप हुआ था, कैसे हुआ इसके बारे में भी एक रोचक कहानी है। क्या सुनना नहीं चाहते हो?

तीनों – जरूर सुनेंगे, जरूर सुनेंगे।

दादाजी – परन्तु आज समय हो रहा है। संध्या प्रार्थना करनी है। अगले रविवार को ही सुनाएंगे। माधव आज तुम्हारी माँ क्यों नहीं आई?

माधव– कोई मेहमान आए हैं इसलिए आ नहीं पाई नानाजी!

दादाजी – ठीक हैं! तब आज के लिए राम राम...

तीनों– राम...राम।

(निरंतर आगामी अंक में)

• ब्रह्मसत्र तेतेलिया, गुवाहाटी (असम)

• चांद मो. घोसी

हिन्दोस्ताँ हमारा

कविता : उमाशंकर 'मनमौजी'

सुनाता एक किस्सा सुनो मेरे नगर में,
तालाब में था रहता मेंढक एक प्यारा।
दोस्ती उसकी हो गई इक बगुले से वहीं,
बगुला नित आता खाने को मछली-चारा।।

बगुले से मेंढक ने एक दिन सुबह बोला,
'कुएं का मेंढक' कह सब देते मुझे ताना।
दुनियां चलो घुमाओ बिठा लो पीठ अपनी,
धरती का ओर-छोर मुझे उड़कर दिखाना।।

बगुले ने कहा किन्तु उछलते हो तुम बहुत,
खुशी के मारे नहीं तुम पीठ से उछलना।
मेंढक को लिए आसमान उड़ चला बगुला,
घूम रहे देश-विदेश वाह-वाह क्या कहना।।

बगुला पूछा मेंढक अब तुमको ऊपर से,
कैसा लग रहा है इस धरती का नजारा?
'मनमौजी' तभी मेंढक यूं बगुले से बोला-
''सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा।''

• भोपाल (म.प्र.)

पुस्तक परिचय

बाल साहित्य जगत में सुविख्यात बाल साहित्यकार **डॉ. बानो सरताज** की लिखित दो रोचक कृतियाँ

बच्चों द्वारा अभिनेय १० बाल एकांकी

प्रकाशक : को आपरेशन पब्लिकेशन धमाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता जयपुर ३०२००३ (राज.)

मूल्य २५०/-

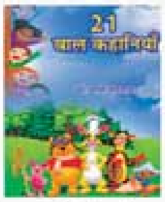

२१ मनोरंजन एवं प्रेरणा से भरपूर रोचक बाल कहानियाँ

प्रकाशक : साहित्य सागर प्रकाशन धमाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता जयपुर ३०२००३ (राज.)

मूल्य १७५/-

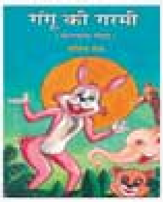

गंगू की गरमी

सुप्रसिद्ध बाल साहित्य सर्जक **गोविन्द शर्मा** की २५ बाल कथाएँ जो बच्चों का मनोरंजन तो करती ही हैं उन्हें प्रेरणा भी देती है।

प्रकाशक : अपोलो प्रकाशन, २५ सिद्धेश्वर महादेव मंदिर के पीछे, न्यू पिंक सिटी मार्केट राजपार्क, जयपुर (राज)

मूल्य २००/-

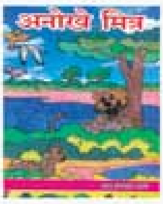

अनोखे मित्र

देवपुत्र सहित बच्चों की विविध पत्रिकाओं में रोचक पहेलियाँ एवं खेल रचकर बच्चों का मनोरंजन कराने वाले कलाकार लेखक **चांद मो. घोसी** की १३ बाल कहानियाँ अर्थात् मनोरंजन का पिटारा।

प्रकाशक : उषा पब्लिशिंग हाऊस, नीम स्ट्रीट, वीर मोहल्ला, जोधपुर (राज.)

मूल्य ६०/-

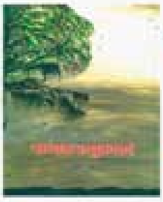

सम्यक लघु कथाएँ

जानी मानी लघुकथाकार **मीरा जैन** रचित रोचक, बोधक, मर्मस्पर्शी ६०लघुकथाएँ जिनमें अपने परिवेश को जांचने वाली एक अनूठी दृष्टि है दृष्टिकोण है समझ है।

प्रकाशक : बोधि प्रकाशन, एफ-७७, सेक्टर-९, रोड़ नं. ११, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया बाईस गोदाम, जयपुर (राज.)

मूल्य २५०/-

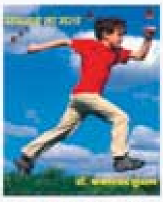

सफलता का मंत्र

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७ से पुरस्कृत **डॉ. फकीरचन्द शुक्ल** की महत्वपूर्ण बाल कहानियां रोचक प्रेरक एवं तथ्यपूर्ण रचनाएँ।

प्रकाशक : वनिका पब्लिकेशन, एन-ए-१६, गली नं. ६, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली ११००१८

मूल्य ११०/-

त्रुटि संशोधन

पुस्तक परिचय स्तम्भ के अन्तर्गत देवपुत्र के अप्रैल २०१७ अंक में पृष्ठ ४४ पर प्रकाशित 'आओ गाएं गीत' और 'चलना सीखो' पुस्तकों के लेखक श्री पवन जी पहाड़िया हैं। भूल से लेखक का नाम डॉ. चक्रधर नलिन प्रकाशित हुआ है।

– सम्पादक

परोपकार ही पूजा

प्रेरक प्रसंग : मोहन उपाध्याय

उन दिनों लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का नारा 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूंगा' चारों और गूँज रहा था। वे गीता के विद्वान देशभक्त और समाज सुधारक थे। वे अंग्रेजी भाषा में साप्ताहिक 'मराठा' और मराठी भाषा में साप्ताहिक 'केसरी' के संपादन करते हुए अपने लेखन से जनता को स्वराज्य और समाज सुधार के लिए प्रेरित कर रहे थे। ऐसे समय एक सज्जन की यह जानने की तीव्र इच्छा हुई कि तिलक महाराज की दिनचर्या कैसी है? और वे किस प्रकार प्रति दिन पूजा पाठ तथा प्रार्थना करते हैं? इसलिए वे सज्जन तिलक जी के पास पहुँचे और उनसे निवेदन किया कि मैं तीन-चार दिन आपके साथ रहकर आपका जीवन देखना चाहता हूँ। तिलक महाराज ने उन्हें स्वीकृति दे दी और वे चार दिनों तक उनके साथ रहे। जब वे सज्जन जाने लगे तो उन्होंने तिलक जी से पूछा- ''महाराज! मैंने देखा कि कभी तो आप थोड़ी देर ध्यान लगाते हैं, कभी थोड़े समय प्रार्थना करते हैं और कभी न ध्यान लगाते हैं। न प्रार्थना करते हैं परंतु किसी न किसी अच्छे काम में व्यस्त हो जाते हैं, ऐसा क्यों? तिलक जी ने हँसकर उनसे कहा- ''भाई ! समय मिल जाता है तो मैं कभी थोड़ी देर ध्यान लगा लेता हूँ, कभी थोड़े समय प्रार्थना कर लेता हूँ परंतु कई बार समय की कमी के कारण मैं परोपकार के कामों में लग जाता हूँ, मेरे लिए तो परोपकार के काम ही पूजा है, भक्ति है।'' लोकमान्य की मधुर और नम्र वाणी सुनकर वे सज्जन गद्गद हो गए और प्रसन्नतापूर्वक अपने घर जाने के लिए निकल पड़े।

• अजमेर (राज.)

शांति का मंत्र

कहानी : राजा चौरसिया

अपने गांव में श्याम का नाम सबसे बड़े आदमी के रूप में जाना जाता था। पहले उसके यहाँ पैसे के लाले पड़े थे लेकिन समय के फेर से उसका भाग्य चमक गया। लोग कहते थे कि यह तो चमत्कार है। जिस घर में आँसू बरसते थे उस घर में पैसा पानी की तरह बरसता है।

श्याम का परिवार छोटा था। सभी प्रकार की सुख सुविधाएँ घर में अटी पड़ी थी। किसी भी चीज की कमी नहीं थी लेकिन घर में शांति का अकाल था। जब देखो तब कलह मची रहती थी। श्याम रात में नींद के लिए बिना पानी की मछली के समान तड़पता था।

परिवार में दो बेटे बहुओं सहित रहते हुए श्याम एवं उसकी पत्नी को लगता था जैसे वे सुखी होकर भी महादुखी हैं। छोटी-सी बात पर भी बाप बेटे और सास बहु के बीच लड़ाई होती ही रहती थी। शोर इतने जोर से होता था कि बेचारे मोहल्ले के लोग परेशान हो जाते थे। उनका मानना था कि वह धन किस काम का जिसके रहते हुए भी जीना हराम हो जाए। 'नदी किनारे घोंघा प्यासा' की कहावत से श्याम की चारों ओर हँसी उड़ती रहती थी।

घर की शांति के बारे में श्याम को चिंता खाए जा रही थी। कभी-कभी वह भूखा ही सो जाता था। इसके बाद भी उसके मन में यह आशा थी कि हर सवाल का हल है, आज नहीं तो कल है। थक जाओ पर हार न मानो। शांति ही सबसे बड़ा धन है। इस प्रकार की बातें सुनकर श्याम बहुत सोचता विचारता रहता था।

संयोग से गाँव के ही एक गाड़ीवान ने श्याम को यह बताया कि यहाँ से दूर एक

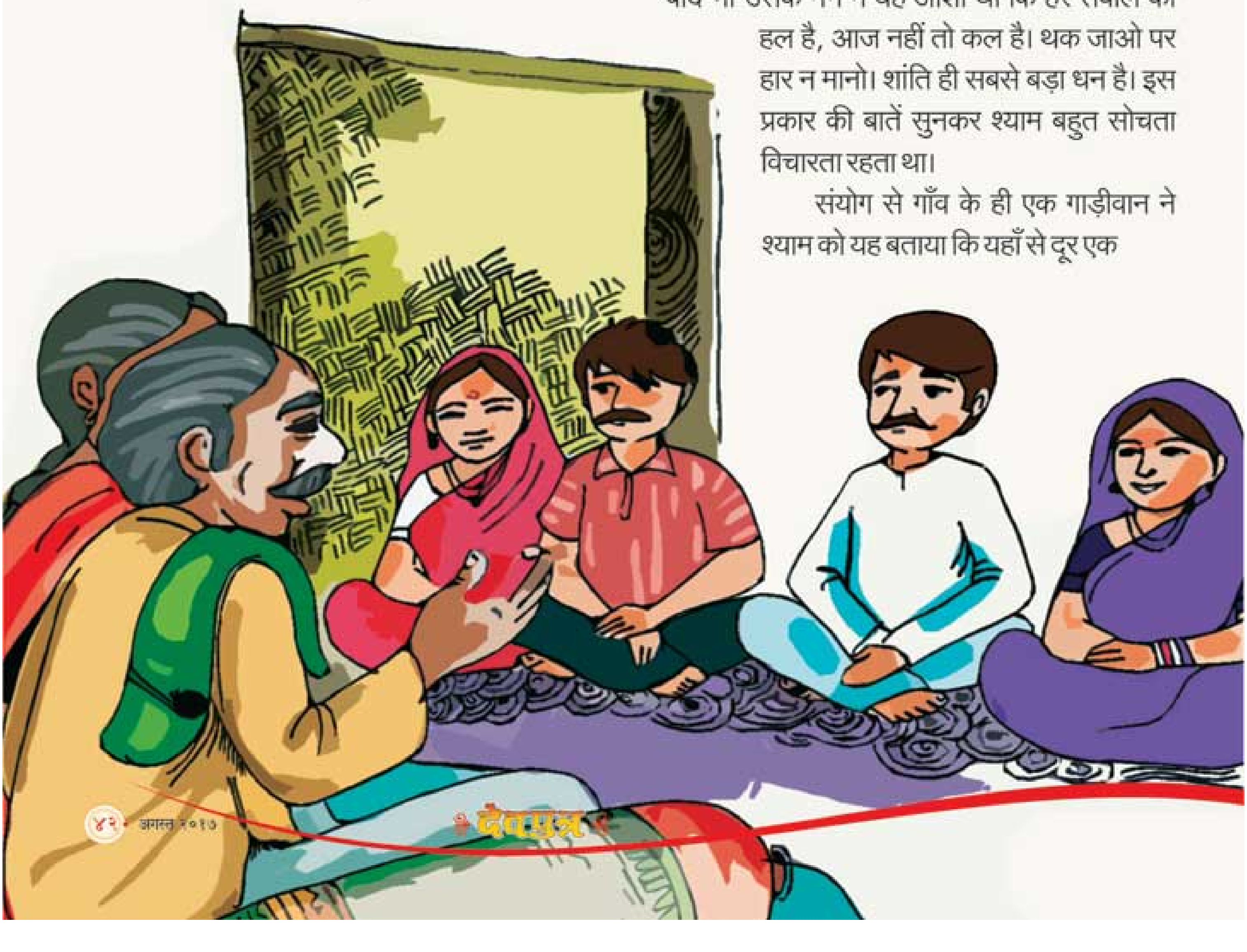

पहाड़ी के पास बने हुए मंदिर में कोई बाबाजी आए हैं जो गृहशांति और आत्मशांति का मंत्र देते हैं। उनका मंत्र रामबाण–सा अचूक है।

यह सुनते ही परेशान को ऐसा लगा मानो डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो। उसने गाड़ीवान से हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए कहा– ''भैया, तुम मुझे ऐसे बाबाजी के पास पहुँचने का उपाय बताओ। तुम मेरा भला करो, भगवान तुम्हारा भला करेगा।'' गाड़ीवान बोला– ''मैं तुम्हें वहाँ तक ले जाने को तैयार हूँ।''

दूसरे दिन सुबह गाड़ीवान अपनी बैलगाड़ी में श्याम को बैठाकर चल पड़ा। रास्ते मे पैदल चलते लोगों से गाड़ीवान पूछता जाता था। धूल–धूसरित ऊबड़–खाबड़ रास्ता होने के कारण दिन डूबने तक ही बैलगाड़ी वहाँ पहुँच पाई। फिर सड़क के किनारे बैलों को ढील देकर वह गाड़ीवान पहाड़ी के उस मंदिर के सामने श्याम को लेकर पहुँच गया। दोनों ने चबूतरे पर पालथी मारकर विराजमान वृद्ध बाबा जी के चरण स्पर्श किए। बाबाजी के हाथ की हरी झंडी मिलते ही श्याम ने सिर झुकाकर अपनी व्यथा सुनाई।

बाबाजी ने अपनी आँखें मूंदकर कुछ पल के लिए ध्यान में लीन हो गए। इसके उपरांत उन्होंने श्याम के कान में धीरे से कुछ कहा जिसे सुनते ही उसने बड़ी शांति सी अनुभव की। विदा होते समय बाबाजी ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा– ''जाओ बेटा! यह मंत्र तुम्हारे घर परिवार के लिए वरदान सिद्ध होगा। परिवार के सभी सदस्यों से कह देना कि जो इस मंत्र का पालन नहीं करेगा उसकी बुद्धि को लकवा लग जाएगा।''

चांदनी रात थी। वे दोनों बैलगाड़ी से गाँव की ओर वापिस चल पड़े। बैलों के गले की घंटियाँ टन–टनाटन बज रही थीं लेकिन गाड़ीवान तो बैचेनी के मारे तड़प सा रहा था। जब रह न गया तो उसने श्याम से पूछ ही लिया– ''भैया रे! बाबाजी ने तुम्हारे कान में कौन–सा शांति मंत्र फूँक दिया है? कभी–कभी मेरे घर में भी तू–तू, मैं–मैं की नौबत आती रहती है। हल्ला सुनकर पूरा मोहल्ला गरियाने लगता है।''

सबसे पहले श्याम ने बहुत आभार जताया फिर मंद मंद मुस्कुराते हुए बताया–''बाबाजी ने यह शांति मंत्र दिया है कि घर में कोई भी ऊंची आवाज में बात नहीं करेगा।'' गाड़ीवान उछलते हुए तत्काल बोला–'' वाह भैया! मैं सब समझ गया। ऊंची आवाज न होगी तो गुस्से की गुंजाईश ही न रहेगी। जहाँ गुस्से के ढोल जैसे बोल नहीं रहते हैं। वहाँ सुख शांति का वास होता है। धीरे बोली गई मधुर वाणी ही कल्याणी होती है। गुस्सा न रहेगा तो कभी झगड़ा न रहेगा। बिना बांस के बांसुरी कैसे हो सकती है?''

श्याम को यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि गाड़ीवान भले ही बिलकुल अँगूठा छाप अपढ़ है लेकिन कितना चतुर है। इस प्रसन्नता के साथ उसे यह विश्वास

था कि उसके घर में झगड़े की झंझट हमेशा के लिए चली जाएगी। अब तो खाया पिया अच्छी तरह हजम होगा। जब घूरे के दिन फिर सकते हैं तो क्या आपने दिन नहीं फिर सकते हैं? बाबाजी का मंत्र डंके की चोट पर फलेगा। चैन से रहने को मिलेगा।

सुबह घर पहुंचते ही उसने देखा कि बहुएँ बेटे उसकी पत्नी से झगड़ रहे हैं। दोनों पक्ष चिल्लाते हुए एक दूसरे को ऊटपटांग बकते जा रहे हैं। श्याम ने धीरज धरते हुए किसी से कुछ भी नहीं कहा। दोपहर के समय उसने सबको अपने पास बुलाया और सब कुछ बताया। पहले तो वे सब झगड़ालु हंसने लगे लेकिन बाबा जी द्वारा बुद्धि को लकवा लगने वाली कही गई बात से वे भयभीत हो गए। दूसरे दिन से सभी ने यह ठान लिया कि ऊँची आवाज में कोई भी बात नहीं करेगा। धीरे बात करने से उस गुस्से की हवा तक नहीं लगती थी जिसके कारण घोर अशांति मची रहती थी। मोहल्ले वाले यह सोचकर बड़े हैरान थे कि यह कैसा जादू-सा हो गया।

ज्यों ही यह खबर हवा पानी की तरह पूरे गाँव में फैल गई त्यों ही सभी ग्रामवासियों ने खुशी मनाई। जिन घरों में अशांति से जीना हराम था उन घरों में भी शांति की चर्चा फूल की सुगंध सी फैलने लगी। ऊंची आवाज में बात न करना शांति का मंत्र है। जिस घर में शांति है वही घर धाम है। यह बात समझकर श्याम का परिवार शांति और प्यारे से रहने लगा। वह बाबा जी को हृदय से धन्यवाद दे रहा था।

• उमरियापान (म.प्र.)

परिणाम घोषित

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१७

देवपुत्र के प्रथम व्यवस्थापक मा. शांताराम जी भवालकर की स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली 'श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१७' के विजेता कहानीकार बच्चे इस प्रकार हैं-

अंशिका चौरसिया	(कक्षा ५) उमरियापान (म.प्र.)	प्रथम- १५००/-
निष्ठा बनर्जी	(कक्षा ८) नागपुर (महाराष्ट्र)	द्वितीय ११००/-
प्राची पाटीदार	(कक्षा ८) खोकराकलां (म.प्र.)	तृतीय १०००/-
सुमन पालीवाल	(कक्षा ७) जैसलमेर (राज.)	प्रोत्साहन ५००/-
कृति प्रजापति	(कक्षा ८) लहार (म.प्र.)	प्रोत्साहन ५५०/-

विजेताओं को पुरस्कार शीघ्र ही प्रेषित किए जाएंगे।

जमीन आसमान

लघुकथा : मीरा जैन

१५ अगस्त के अवसर पर एक विदेशी सामाजिक संस्था के प्रमुख भारत के सबसे बड़े बाल आश्रम में झंडा वंदन के कार्यक्रम में सम्मलित हुए। कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात उन्होंने उपस्थित बाल समुदाय से पूछा– ''प्यारे बच्चो! मैं आप सबके बीच आज इसलिए उपस्थित हुआ हूँ कि आपकी जरूरतों को पूरी करने में आप सभी की कुछ मदद कर सकूँ क्योंकि हमारी संस्था का मुख्य उद्देश्य ही आप जैसे अनाथ व बेसहारा बच्चों को सहारा देना है। बताओ बच्चो! आप लोगों को किन–किन चीजों की सबसे ज्यादा आवश्यकता महसूस होती है? हम उसे पूरा करेंगे।''

किन्तु किसी भी बालक ने किसी भी प्रकार की माँग नहीं रखी। ज्यादा जोर देने पर बच्चों के प्रतिनिधि ने अपनी मंशा कुछ यूं व्यक्त की–

''प्रणाम काका! आप हमारे शुभचिंतक हैं बहुत बहुत धन्यवाद। बस एक छोटी सी बात आपसे कहना चाहता हूँ?''

''हाँ–हाँ बोलो बेटा! क्या बात है?''

पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उसने तिरंगे झंडे की ओर इशारा करते हुए कहा–''काका! जिनके सिर पर तिरंगा लहरा रहा हो वे भला अनाथ व बेसहारा कैसे हो सकते हैं?''

एक बच्चे के मुख से देशभक्ति की इतनी सटीक परिभाषा सुन उनकी आँखों से श्रद्धा के आँसू टपक पड़े। उन्होंने भारत के बारे में क्या सोचा था, क्या पाया। उनके मुख से बरबस ही निकल पड़ा वास्तव में भारत महान है।

• उज्जैन (म.प्र.)

देवपुत्र और मुक्त संवाद व तरुण मंच का आयोजन

बालनाट्य समारोह २०१७

इन्दौर। विगत ९ से ११ जून २०१७ को माई मंगेशकर सभागृह इन्दौर में निरंतर ६ वर्षों से चल रहे बाल नाट्य के लब्धप्रतिष्ठ आयोजन बालनाट्य समारोह का आयोजन सम्पन्न हुआ। देवपुत्र एवं तरुणमंच के सहयोग से मुक्तसंवाद द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय आयोजन में ५५० से अधिक बाल कलाकारों ने ४१ बालनाट्यों की अभिराम प्रस्तुति दी।

मुख्य अतिथियों के रूप में सिने अभिनेत्री सुश्री मृणाल कुलकर्णी एवं बैंक आफ महाराष्ट्र के प्रबंध निदेशक श्री रवीन्द्र मराठे उपस्थित रहे। इस प्रसंग पर प्रख्यात रंगकर्मी श्री जयंत देशमुख एवं श्री सतीश मुंग्रे का विशिष्ट सम्मान किया गया। देवपुत्र के प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना की विशिष्ट उपस्थिति प्राप्त हुई। संयोजक थे सौ तृप्ति महाजन एवं श्री मोहन रेडगांवकर। यह जानकारी सह संयोजक डॉ. विकास दवे ने दी।

चित्र -विचित्र

• राजेश गुजर

इस चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए कि कौन से दो जीवों के शरीर की परछाई भी है।

उत्तर- आमने सामने दो बत्तख और दो हाथियों के चेहरे की परछाई है।

चुटकुले

◀ विष्णुप्रसाद चौहान

गाँव में किसी के भी मरने पर श्मशान के पास बनी सरकारी शाला की छुट्टी कर दी जाती थी और बच्चों की मौज हो जाती थी। आज भी कोई मर गया था, इसलिए सभी बच्चे अपने-अपने घर जा रहे थे। रास्ते में दो बूढ़े चौपाल पर हुक्का पी रहे थे। सोनू-मोनू ने उन्हें देखा तो जोर जोर से हंसने लगे। उनको हंसता देख एक बूढ़े व्यक्ति ने हंसने का कारण पूछा तो सोनू बोला- ''बाबा, मोनू कह रहा है, सामने देख दो छुट्टियाँ हुक्का पी रही हैं।''

(तम्बाकू का सेवन मौत को दावत है।)

****

श्याम- ''मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा, इसका भविष्य काल बताओ।''

राघव- छुट्टी के बाद तुम्हारी मोटर सायकल पंचर मिलेगी।

****

शिक्षक (छात्र से) - कॉपी छुपा लो, पीछे वाला देख रहा है।

छात्र - देखने दो सर, मैं अकेला फेल नहीं होना चाहता।

****

सोनू (मोनू से) - यह शादी का क्या मतलब है?

मोनू - धूमधाम से खुद की सुपारी देना।

****

एक बार एक लड़का चाकू पर धार करवाने बाजार जाता है। वह धार वाले से कहता है इस कनाइफ (knife) की धार तेज कर दो, तो धार वाला बोला- तुम वरोंग (wrong) बोल रहे हो। इस बात को लेकर दोनों में झगड़ा हो जाता है। उसी समय वहां से एक आदमी गुजर रहा होता है, तो वे दोनों उससे पूछते हैं कि हम दोनों में से कौन सही अंग्रेजी बोल रहा है, तो वह आदमी कहता है कि जब तुम्हें अंग्रेजी बोलने की कनोलेज (knowledge) ही नहीं है, तो तुम बोल क्यों रहे हो?

****

बेटा - (पिता से) - पिताजी ये साढू भाई का कौन सा रिश्ता होता है?

पिताजी- जब दो अंजान व्यक्ति एक ही कंपनी द्वारा ठगे जाते हैं, तो आपस में साढू कहलाते हैं।

****

शिक्षिका - इंसान वही है जो दूसरों के काम आए।

छात्रा- पर टीचर परीक्षा में तो न आप हमारे काम आती हैं और न दूसरों को आने देती हैं।

****

भिखारी डॉ. साहब मैं चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी करवाना चाहता हूँ।

डाक्टर - लेकिन तुम तो ऐसे ही खूबसूरत लग रहे हो।

भिखारी - इसलिए तो कोई मुझे फूटी कौड़ी भी नहीं देता।

• ढाबला हरदू (म.प्र.)

मुख्य
मेधावी विद्य

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

" माननीय मुख्यमंत्री, श्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर **'मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना'** के अंतर्गत प्रदेश के प्रतिभावान छात्रों की उच्च शिक्षा का खर्च शासन द्वारा वहन किया जाएगा। "

दीपक जोशी
राज्य मंत्री, तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास (स्वतंत्र प्रभार), श्रम, स्कूल शिक्षा, म.प्र.

योज

- इंजी
में रे
शास
प्राप
शास
फीस
हो
- मेडि
(N
सरव
प्राय
दारि
विद
शास
- विधि
देश
कक्ष

- पात्र
रजि
- पात्र
प्राप
- जिन
जा
- सी.

मंत्री
ार्थी योजना

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

ना की प्रमुख विशेषताएं

- **ोनियरिंग:** कोई भी विद्यार्थी जिसका JEE मेन्स परीक्षा ंक 50 हजार के अंतर्गत हो। अगर विद्यार्थी किसी भी सकीय अथवा अशासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश त करता है तो शासकीय कॉलेज की पूरी फीस राज्य सन द्वारा वहन की जावेगी। साथ ही प्रायवेट कॉलेज की त 1.5 लाख रुपये या वास्तविक शिक्षण शुल्क जो कम राज्य शासन द्वारा वहन की जावेगी।
- **कल:** जिन छात्रों ने राष्ट्रीय पात्रता और प्रवेश परीक्षा EET) से मेरिट पाकर देश के किसी भी केन्द्र या राज्य कार के मेडिकल कॉलेज अथवा मध्यप्रदेश में स्थित वेट मेडिकल कॉलेज के एमबीबीएस पाठ्यक्रम में खिला प्राप्त किया हो। शासकीय मेडिकल कॉलेज में ार्थियों की पूरी फीस एवं निजी क्षेत्र में देय शुल्क राज्य सन द्वारा वहन किया जावेगा।
- **धि:** CLAT (कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट) के माध्यम से भर में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों (NLU) में बारहवीं ा के बाद एडमिशन वाले कोर्स की पूरी फीस राज्य शासन द्वारा वहन की जावेगी।
- मध्यप्रदेश में स्थित भारत सरकार तथा राज्य सरकार के प्रमुख संस्थान जैसे योजना तथा वास्तुकला विद्यालय, भोपाल (SPA), IIM इंदौर के 5 वर्षीय इंटीग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन प्रोग्राम के कोर्स की पूरी फीस राज्य शासन द्वारा वहन की जावेगी।
- राज्य शासन के सभी कॉलेज जिसमें बी.एस.सी., बी.ए., बी.कॉम., नर्सिंग, पॉलिटेक्निक तथा स्नातक स्तर के सभी पाठ्यक्रमों की पूरी फीस राज्य शासन द्वारा वहन की जावेगी।

पात्रता की शर्तें

- विद्यार्थियों का मध्यप्रदेश का निवासी होना आवश्यक
- विद्यार्थी के पिता/पालक की वार्षिक आय रु. 6 लाख से कम हो
- वर्ष 2017 में माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा में 75% या उससे अधिक अंक अथवा सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.ई. द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा में 85% या उससे अधिक अंक

ा विद्यार्थी **www.mptechedu.org** एवं **www.scholarshipportal.mp.nic.in** पर अपना स्ट्रेशन करवा आवेदन प्रस्तुत करें तथा आवश्यक दस्तावेज अपलोड करें।

ा विद्यार्थी योजना सम्बन्धित जानकारी हेल्पलाइन मेल आईडी **mmvyhelpline.dte@mp.gov.in** से त कर सकते है।

ा पात्र विद्यार्थीयों ने योजना प्रारम्भ होने से पूर्व शुल्क जमा कर दिया है। उनके शुल्क वापसी की कार्यवाही की रही है।

एम. हेल्पलाइन नं.: 181

तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग, मध्यप्रदेश